# भारतवर्ष की
# धर्मानुसार जनसांख्यिकी
## पर आधारित एक सचित्र प्रस्तुति

मूल लेखक
अशोक जोशी ◆ मण्डयम् श्रीनिवास
जितेन्द्र बजाज

समाजनीति समीक्षण केन्द्र

यह सचित्र प्रस्तुति समाजनीति समीक्षण केन्द्र चेन्नै द्वारा २००३ में प्रकाशित इसी शीर्षक की विस्तृत पुस्तक पर आधारित है। इस प्रस्तुति के आँकड़ों एवं विश्लेषण में २००१ की जनगणना के सद्यप्रकाशित आँकड़ों का समावेश कर लिया गया है। लेखक इस प्रस्तुति के पाठ एवं आँकड़ों के शोधन के श्रमसाध्य कार्य में सहायता के लिये डा. रुचि शर्मा के आभारी हैं। श्री सुदर्शन ने प्रयत्नपूर्वक इस प्रस्तुति को मुद्रण के लिये सज्जित किया है। जितेन्द्र बजाज अपने सुपुत्र आञ्जनेय बजाज के अनेक प्रकार के सहयोग का सस्नेह उल्लेख करना चाहते हैं।

सर्वाधिकारी: **समाजनीति समीक्षण केन्द्र**, चेन्नै २००५

डा. जितेन्द्र बजाज द्वारा समाजनीति समीक्षण केन्द्र चेन्नै से प्रकाशित
२७ राजशेखरन् स्ट्रीट, मयिलापुर, चेन्नै - ६०० ००४
*e-mail: policy@vsnl.com, website: www.cpsindia.org*

मुद्रक: नीलकंठ कम्युनिकेशन, नयी दिल्ली, फोन: ९८१००३००१४

आईएसबीएन ८१-८६०४१-२१-४
ISBN 81-86041-21-4

मूल्य: १०० रुपये मात्र

# भारतभूमि की सुगठित एकरूपता

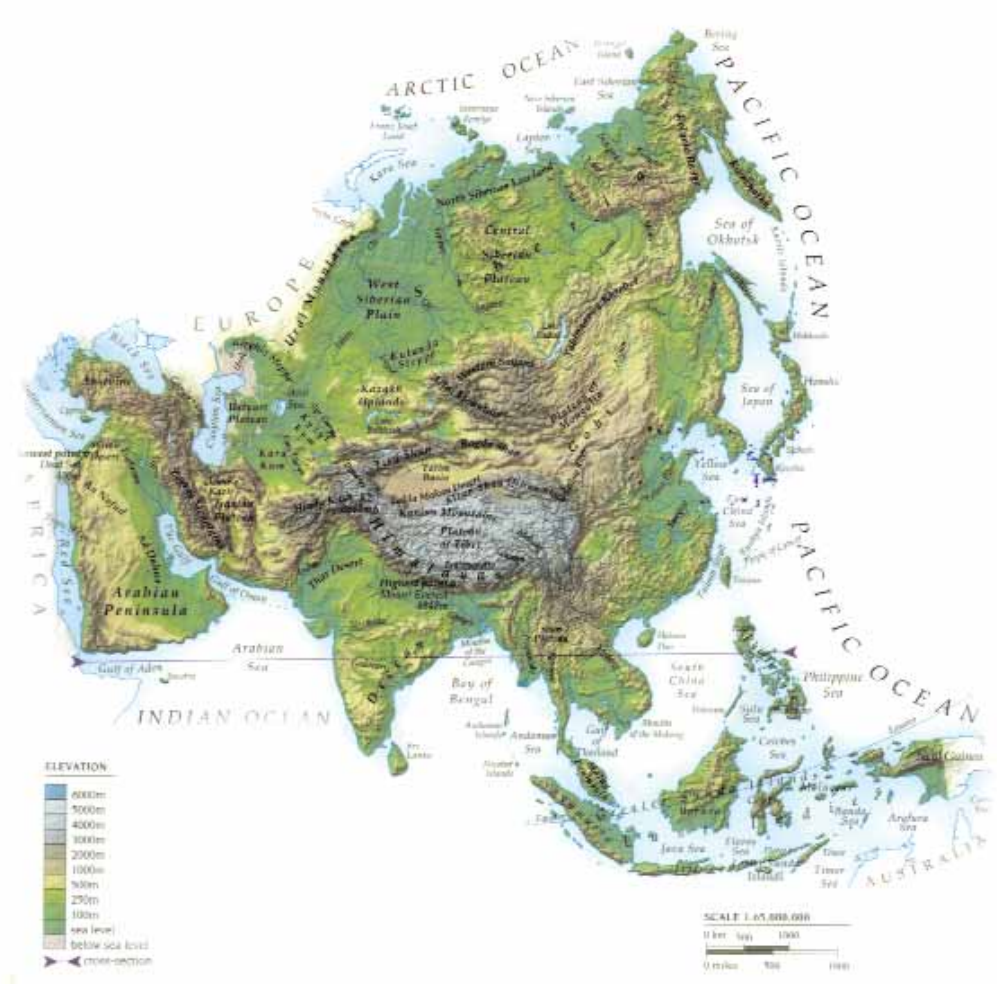


- भारतभूमि एक सुगठित सघन भौगोलिक इकाई है।
- उत्तर में अत्युच्च हिमालय पर्वत एवं दक्षिण में गहन महासागर के मध्य विस्तृत इस क्षेत्र पर भूमितल समुद्रतल से कदाचित् ही ३००० फुट से अधिक ऊँचा उठता है।
- भारतभूमि एक सहज सुदृढ़ दुर्ग-सी है।
- उत्तर में हिमालय की उच्च एवं सुदीर्घ प्राचीर को लाँघना प्रायः असम्भव ही है।
- दक्षिण में दूर-दूर तक विस्तृत सागर है, सहस्रों मीलों तक किसी अन्य भूमितट का छोर नहीं मिलता।

# भारतभूमि की अखण्ड उर्वरता

- प्रायः अन्य समस्त सभ्यताएँ किसी एक परिसीमित केन्द्रीय क्षेत्र पर पनपती हैं और आसपास का विस्तृत क्षेत्र उनके आधिपत्य में आया सहयोगी संरक्षित क्षेत्र-सा ही होता है। समस्त भारतभूमि भारतीय सभ्यता की केन्द्रभूमि है। भारतभूमि का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं जहाँ सभ्यता के पोषण के लिये पर्याप्त साधन प्राप्त न हों।
- भारतभूमि का आधा क्षेत्र कृषियोग्य है। विश्व के अन्य सम्पन्न एवं विस्तृत क्षेत्रों का पाँचवां भाग भी प्रायः कृषियोग्य नहीं होता।

| देश अथवा क्षेत्र | कुल क्षेत्र (करोड़ हेक्टे.) | कृषियोग्य क्षेत्र (करोड़ हेक्टे.) |
|---|---|---|
| भारतवर्ष | 42.3 | 19.0 |
| चीन | 96.0 | 12.4 |
| सं. रा. अमरीका | 93.6 | 17.7 |
| रूसी संघ | 170.8 | 12.6 |
| ब्राजील | 85.1 | 5.3 |

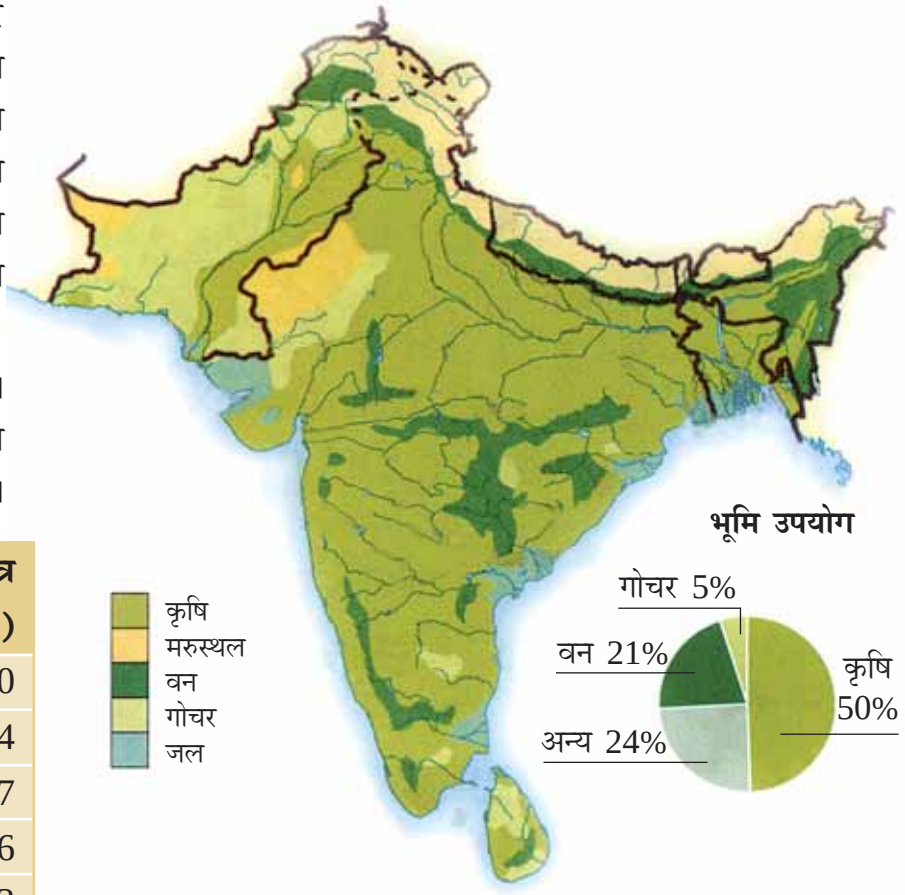

# भारतीय संस्कृति की विशिष्टता

भारतवर्ष एक विशिष्ट एकरूप भूगोल से उपकृत तो हुआ ही है, यह देश विशिष्ट एकरूप संस्कृति से भी सम्पन्न है। यह संस्कृति अनादिकाल से भारतभूमि पर व्याप्त रही है। इसके प्रभावी प्रसार को देखकर भारतवर्ष की जनसांख्यिकी के प्रथम आधुनिक अध्येता १९५१ के अधुनातन काल में भी यह कह उठे –

> भारतीय संस्थाएँ एवं भारतीय विचार अद्वितीय हैं, अन्यत्र इनकी कोई समानता नहीं है। यहाँ की संस्थाओं और विचारों का अपना एक विशिष्ट रूप है, विशिष्ट रंग है। विदेश से आने वाले कतिपय प्रभाव इनमें समाहित होते चले गये हैं। क्योंकि भारत राजनैतिक स्तर पर चाहे यदा-कदा बाह्य लोगों द्वारा पराजित हुआ हो, यहाँ की संस्कृति सर्वदा अविजित ही रही है।
>
> यह संस्कृति भारतभूमि के प्रायः समस्त भागों में व्याप्त रही है। कतिपय स्थानीय प्रभाव इस एकरूप संस्कृति में अवश्य लक्षित होते हैं। परन्तु उपमहाद्वीप के भीतर के भौगोलिक अथवा सामाजिक अवरोध कहीं भी इस मूलभूत सर्वमान्य संस्कृति के प्रसार को रोक नहीं पाए। अनेक स्थानीय भिन्नताओं के होते हुए भी भारतवर्ष में सब स्थानों पर एक विशिष्ट भारतीयता व्याप्त दिखती है।

# भारतीय संस्कृति की एकरूपता

- भारतीय संस्कृति की विशिष्ट एकरूपता सनातन धर्म में निहित है। सनातन धर्म भारतभूमि का सहज धर्म है। समस्त भारतीय इस धर्म का अनुसरण करते रहे हैं। बाहर से आकर भारतभूमि पर बसने वाले लोग भी सनातन धर्म में ही अवलम्बित होते गए।

- अतीत में बाहर से यहाँ पहुँचने वाले लोगों की संख्या अधिक नहीं है। विशाल हिमालयपर्वत और विस्तृत सागर ने भारतभूमि को एक सहज-सुदृढ़ दुर्ग का स्वरूप दिया है। इस दुर्ग में पहुँचना उत्तरपश्चिम के कतिपय उच्च एवं दुर्गम पर्वतीय मार्गों से ही सम्भव रहा है।

- यवन सेनानायक एलैक्ज़ैंडर के समय से भारत में आने वाले कतिपय अध्येता एवं इतिहासकार भारत की प्राकृतिक समृद्धि और सांस्कृतिक एकरूपता से सदैव ही विस्मित होते रहे हैं। यहाँ पहुँचने वालों में से अनेक शीघ्र ही भारत के एकरूप सांस्कृतिक परिवेश में लीन हो गए। महाराजा कनिष्क जैसे जो विदेशी भारतभूमि पर पाँव जमाने में सर्वाधिक सफल रहे, वे सनातन धर्म के महान् अनुयायी बने और भारतीय सभ्यता के मूल आदर्शों का भारत से बाहर दूर-दूर के क्षेत्रों तक प्रसार करने में सहायक हुए।

# यह एकरूपता १२०० ई० तक अखण्डित रही

- सन् ११९२ ईसवी में महापराक्रमी पृथ्वीराज चौहान की पराजय के उपरान्त मुस्लिम राज्य भारत के हृदयप्रदेश में स्थापित हुआ।

- मुस्लिम शासक भारत की एकरूप संस्कृति के भीतर अपनी पृथक् मुस्लिम पहचान बनाये रखने पर प्रतिबद्ध थे। अतीत के विदेशी शासकों के विपरीत मुस्लिम शासक भारत के सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिवेश में सम्मिलित होने से सप्रयास बचते रहे। मुस्लिम शासकों में जो अपेक्षाकृत उदार माने जाते हैं और जिन्होंने भारतीयों को बलपूर्वक धर्मच्युत करने के संगठित प्रयासों को प्रश्रय नहीं दिया, वे भी पृथक् मुस्लिम पहचान के प्रति आग्रह तो रखते ही रहे। इस प्रकार भारत में सर्वप्रथम अनेकता का प्रादुर्भाव हुआ। एकरूप भारतीय समाज भिन्न-भिन्न हिन्दु और मुस्लिम समाजों में विभाजित हुआ।

- ब्रितानी शासकों ने ईसाइयत को प्रश्रय एवं प्रोत्साहन देकर भारत में एक अन्य प्रकार की विभिन्नता का प्रसार किया। उन्होंने भारतीय संस्कृति की एकरूपता, सत्यता एवं उपादेयता के प्रति भारतीय लोगों के मन में संशय का संचार भी किया। एकरूप भारतीयता को छिन्न-भिन्न करने में इस प्रकार होने वाले मतिभ्रम की भूमिका ईसाइयत के प्रचार-प्रसार से भी कहीं अधिक रही।

# विषमता का आकलन: स्रोत एवं परिभाषाएँ

- इस प्रस्तुति में हम विभिन्न धार्मिक समुदायों के परिवर्तित हो रहे पारस्परिक अनुपात संबंधी आँकड़े एकत्र करके भारत में बढ़ती हुई विषमता का जनसांख्यिकीय आकलन कर रहे हैं।
- इस उद्देश्य से हमने भारत की जनसंख्या को मुस्लिम, ईसाई और भारतीय धर्मावलम्बी नामक तीन समूहों में संग्रहित किया है। भारतीय धर्मावलम्बी प्रधानतः हिन्दु हैं। सन् २००१ में भारतीय धर्मावलम्बियों में ९५.५% हिन्दु हैं। इनके अतिरिक्त २.२% सिक्ख, ०.९% बौद्ध एवं ०.५% जैन हैं।
- हमने १८७१ से २००१ के मध्य के प्रत्येक दशक के लिए इन तीन समूहों के पारस्परिक अनुपात का आकलन किया है। इस कार्य में प्रमुखतः भारतीय जनगणना के आँकड़ों और कभी-कभार संयुक्त राष्ट्र के अनुमानों का प्रयोग हुआ है।
- विश्व के अन्य देशों के बदलते धार्मिक अनुपात के आँकड़ों के लिए "वर्ल्ड क्रिस्चियन एन्साइक्लोपीडिया" नामक विस्तृत संकलन का उपयोग किया गया है।
- प्रस्तुत आँकड़ों का संग्रह विभिन्न स्तरों पर हुआ है। प्रथम, सम्पूर्ण भारतवर्ष के आँकड़े हैं। यह भूमि अब भारतीय संघ, पाकिस्तान एवं बांग्लादेश में विभाजित है। दूसरे, इन तीन इकाइयों के पृथक् आँकड़े हैं। अंततः, भारतीय संघ के समस्त जनपदों के लिए पृथक्-पृथक् आँकड़े हैं।
- इस प्रस्तुति में दिये गये आँकड़े एवं विश्लेषण हमारी विस्तृत पुस्तक "रिलीजियस डेमोग्राफी ऑफ इण्डिया" पर आधारित हैं। २००१ की जनगणना के आँकड़ों को यहाँ जोड़ लिया गया है।

# भारतवर्ष की धर्मानुसार जनसंख्या: १८८१-२००१

| | 1881 | 1901 | 1941 | 1951 | 1991 | 2001 |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कुल | 250,155 | 283,868 | 388,998 | 441,515 | 1,068,068 | 1,305,721 |
| भारतीय धर्मी | 79.32 | 77.14 | 73.81 | 73.68 | 68.72 | 67.56 |
| मुस्लिम | 19.97 | 21.88 | 24.28 | 24.28 | 29.25 | 30.38 |
| ईसाई | 0.71 | 0.98 | 1.91 | 2.04 | 2.04 | 2.06 |

कुल जनसंख्या सहस्रों में। अन्य पंक्तियों में विभिन्न धर्मावलम्बियों का प्रतिशत अनुपात।

- जिस क्षेत्र को भौगोलिक एवं ऐतिहासिक स्तर पर भारतवर्ष की संज्ञा दी जाती है, उसके धर्मानुसार जनसांख्यिकी आँकड़े सीधे-सरल अपितु आश्चर्यजनक हैं।
- भारतवर्ष में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात १८८१ में ७९ प्रतिशत था, २००१ में ६७ प्रतिशत है। इन १२० वर्षों में भारतवर्ष की जनसंख्या में उनके भाग में कुल १२ प्रतिशत अंकों का ह्रास हुआ है। केवल १९९१-२००१ के दशक में भारतीय धर्मावलम्बियों के भाग में १.१६ प्रतिशत अंकों का ह्रास हुआ है।
- किसी सुगठित भौगोलिक इकाई में किसी एक समूह के अनुपात में इस स्तर का ह्रास असामान्य है।
- अकबर के समय जब मुगल साम्राज्य अपनी पराकाष्ठा पर था और भारत के कुछ भागों में मुस्लिम राज्य स्थापित हुए प्रायः ४०० वर्ष हो चुके थे, तब भारतवर्ष में मुस्लिम अनुपात १६ प्रतिशत से अधिक नहीं था। मध्ययुग की उन चार शताब्दियों में भारतीय धर्मावलम्बियों के भाग में अधिकतम इन १६ प्रतिशत अंकों का ह्रास हुआ था, आधुनिक काल की प्रायः एक शताब्दी में १२ प्रतिशत अंकों का ह्रास हो गया है।

# इक्कीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध की स्थिति

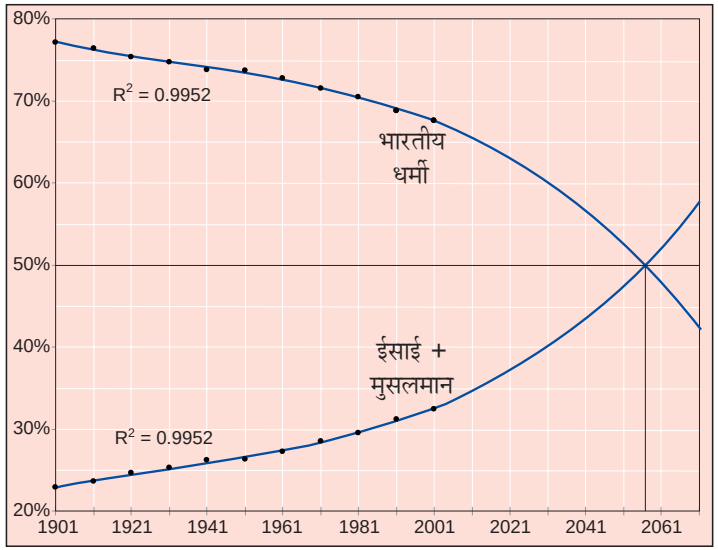


- भारत की धार्मिक जनसांख्यिकी के प्रायः १०० वर्षों के आँकड़ों का सामान्य सांख्यिकी तकनीकों के माध्यम से विश्लेषण करने पर ऊपर दर्शायी गयी प्रवृत्तिरेखा प्राप्त होती है। इस प्रवृत्तिरेखा में २००१ तक के आँकड़ों का समावेश कर लिया गया है। १९९१ तक के आँकड़ों के आधार पर जो प्रवृत्तिरेखा हमने पहले बनायी थी उस पर भी २००१ के आँकड़े सही बैठते हैं।
- इस प्रवृत्तिरेखा के अनुसार सन् २०६१ ईसवी के आते-आते भारतवर्ष में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात ५० प्रतिशत से न्यून रह जाएगा।
- भारतीय संघ, पाकिस्तान एवं बांग्लादेश की जनसंख्या के लिए संयुक्त राष्ट्र के पूर्वानुमानों का विश्लेषण करने पर भी ऐसा प्रतीत होता है कि सन् २०५० ईसवी में भारतवर्ष में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात ५५-५८ प्रतिशत ही होगा।

# भारतीय संघ, पाकिस्तान एवं बांग्लादेश की धर्मानुसार जनसंख्या: १९०१-२००१

| | 1901 | 1941 | 1951 | 1991 | 2001 |
|---|---|---|---|---|---|
| भारतीय संघ | 86.64 | 84.44 | 87.22 | 85.07 | 84.22 |
| पाकिस्तान | 15.93 | 19.69 | 1.60 | 1.65 | 1.84 |
| बांग्लादेश | 33.93 | 29.61 | 22.89 | 11.37 | 10.03 |

कुल जनसंख्या में भारतीय धर्मावलम्बियों का प्रतिशत अनुपात।

- पाकिस्तानः भारतवर्ष का जो भाग कालक्रम में पाकिस्तान बना, वहाँ १९०१ में १६% भारतीय धर्मावलम्बी हुआ करते थे। १९४१ में उनका अनुपात बढ़कर २०% हो गया, विभाजन के पश्चात् १९५१ में उनका अनुपात २% से भी न्यून रह गया। तब से यह प्रायः उसी स्तर पर बना हुआ है।
- बांग्लादेशः इस भाग में भा. धर्मियों का अनुपात १९०१ में ३४% था। १९४१ में यह घटकर ३०% रह गया। विभाजन के समय यहाँ से भा. धर्मियों का पाकिस्तान जैसा सम्पूर्ण निष्कासन नहीं हुआ। १९५१ में उनका अनुपात २३% था। तब से वहाँ से उनके निष्कासन की एक सघन सतत प्रक्रिया चल रही है। २००१ में उनका अनुपात मात्र १०.०३% रह गया है, जो उनके १९५१ के अनुपात के आधे और १९०१ के अनुपात के एक तिहाई से न्यून है। १९९१-२००१ के दशक में वहाँ हिन्दुओं की संख्या में मात्र १.८% की वृद्धि हुई है, जबकि मुसलमानों की संख्या १८.३% बढ़ी है।
- भारतीय संघः भारतवर्ष के इस भाग में भा. धर्मियों का अनुपात १९०१ में ८७% था, १९४१ में यह घटकर ८४.५% रह गया। विभाजन के पश्चात् १९५१ में उनका अनुपात कुछ बढ़कर ८७% हुआ। १९५१ से २००१ के पाँच दशकों में यह अनुपात घटकर १९४१ के स्तर से भी न्यून हुआ है। २००१ की जनगणना का यही कदाचित् सब से विचारणीय तथ्य है।

# भारतीय संघ में विभिन्न धर्मावलम्बियों की वृद्धि की गति: १९५१-२००१

- भारतीयसंघ की जनसंख्या स्वतन्त्रता-पश्चात् के प्रथम दशक में २१.६४% और दूसरे दशक में २४.८०% बढ़ी। तीसरे दशक से वृद्धि की गति घटने लगी और अब दशवार्षिक वृद्धि की गति २१.५६% रह गयी है।
- भारतीय धर्मियों की जनसंख्या में वृद्धि की गति १९७१-८१ में अधिकतम २४.०९% तक पहुँची, अब घट कर २०.३४% रह गयी है।

| | 1951-1961 | 1961-1971 | 1971-1981 | 1981-1991 | 1991-2001 |
|---|---|---|---|---|---|
| कुल जनसंख्या | 21.64 | 24.80 | 24.66 | 23.85 | 21.56 |
| भारतीय धर्मी | 21.16 | 23.84 | 24.09 | 22.79 | 20.34 |
| मुसलमान | 24.43 | 30.84 | 30.74 | 32.89 | 29.50 |
| ईसाई | 27.29 | 32.60 | 17.38 | 17.70 | 23.13 |

दशक में वृद्धि प्रतिशत में।

- मुसलमानों की दशवार्षिक वृद्धि १९५१-६१ में भा. धर्मियों से मात्र १५% अधिक थी। फिर उनकी वृद्धि की गति अत्यन्त तीव्रता से बढ़ी और १९८१-९१ में ३२.८९% तक पहुँच गयी। १९९१-२००१ के मध्य यह गति कुछ क्षीण हुई है। परन्तु भा. धर्मियों और मुसलमानों की वृद्धि में अन्तर अब ४५% है, पिछले दशक में यह अन्तर ४४% था। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् के पहले दशकों की अपेक्षा अब मुसलमानों एवं भा. धर्मियों की वृद्धि में अन्तर कहीं अधिक है।
- प्रथम दो दशकों में ईसाईयों की वृद्धि सबसे अधिक थी। १९६१-७१ में यह गति ३२.६०% तक पहुँच गयी थी। अगले दशक में इस गति में तीव्र ह्रास हुआ। १९७१-८१ एवं १९८१-९१ में ईसाइयों की वृद्धि अन्यों की अपेक्षा पर्याप्त न्यून रही।
- १९९१-२००१ के दशक में ईसाइयों की वृद्धि सहसा २३.१३% तक बढ़ गयी है। यह वृद्धि कुल जनसंख्या में हुई वृद्धि से अधिक है। इस दशक में अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, त्रिपुरा और दादरा एवं नगर हवेली में ईसाई धर्मपरिवर्तन की प्रक्रिया में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है, परन्तु ईसाइयों के अनुपात में वृद्धि भारतीय संघ के प्रायः सब प्रान्तों में दिखायी दे रही है।

# विभिन्न धर्मावलम्बियों में ०-६ आयुवर्ग के बच्चों का अनुपात

| कुल | भारतीय धर्मी | मुस्लिम | ईसाई |
|---|---|---|---|
| 15.93 | 15.55 | 18.74 | 13.45 |

तालिका में विभिन्न धर्मावलम्बियों की कुल जनसंख्या में ०-६ आयु समूह का प्रतिशत अनुपात दर्शाया गया है।

- मुसलमानों में नैसर्गिक वृद्धि की गति अन्यों की अपेक्षा सर्वदा अधिक रही है। १९०१ की जनगणना से ही यह तथ्य रेखांकित किया जाता रहा है।
- स्वतन्त्रतोपरान्त विभिन्न सामाजिक-आर्थिक आयामों सम्बन्धी आँकड़ों की धर्मानुसार तालिकाएँ बनाना बंद कर दिया गया था। अतः विभिन्न धर्मावलम्वियों की नैसर्गिक वृद्धि सम्बन्धी सूचना जनगणना से प्राप्त नहीं हो पाती थी। अब २००१ की जनगणना में प्रथमतः कतिपय सामाजिक-आर्थिक आयामों सम्बन्धी आँकड़े धर्मानुसार प्रकाशित किये गये हैं।
- इन आँकड़ों के अनुसार मुसलमानों में ०-६ आयु के बच्चों का अनुपात अन्यों से कहीं अधिक है। भारतीय संघ की कुल जनसंख्या की अपेक्षा मुसलमानों में प्रति १०० व्यक्तियों पर ३ अतिरिक्त बच्चे हैं।
- हरियाणा, चंडीगढ़, उत्तरांचल, असम एवं पश्चिमी बंगाल में यह अन्तर और भी अधिक है। इन राज्यों में मुसलमानों में प्रति १०० व्यक्तियों पर ६-१० अतिरिक्त बच्चे हैं।
- ईसाइयों में ०-६ आयु समूह के बच्चों का अनुपात अपेक्षाकृत न्यून है। उनके अनुपात में जो वृद्धि हो रही है वह स्पष्टतः नैसर्गिक वृद्धि के कारण नहीं है। उनका अनुपात धर्मपरिवर्तन जैसे अन्य कारणों से ही बढ़ रहा है।

# भारतीय संघ की धर्मानुसार जनसंख्या: तीन पृथक् क्षेत्र

- धर्मानुसार जनसांख्यिकी के आधार पर भारतीय संघ तीन भागों में विभाजित दिखता है।
- क्षेत्र-१ वह क्षेत्र है जहाँ भारतीय धर्मावलम्बियों का वर्चस्व-सा है। इस क्षेत्र के प्रत्येक राज्य में उनका अनुपात ८५% से अधिक है। पूरे क्षेत्र में उनका माध्य अनुपात ९१% है।
- क्षेत्र-२ वह क्षेत्र है जहाँ भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात तीव्रता से घट रहा है। उत्तरांचल को छोड़ कर इस क्षेत्र के सब राज्यों में उनका अनुपात ६५-८५% है। पूरे क्षेत्र में उनका माध्य अनुपात ७९.४% बैठता है।
- क्षेत्र-३ वह क्षेत्र है जहाँ भारतीय धर्मावलम्बी अपना वर्चस्व खो चुके हैं। गोवा, अरुणाचल एवं त्रिपुरा को छोड़ कर इस क्षेत्र के अन्य सब राज्यों में उनका अनुपात अब ६५ प्रतिशत से कम है। पूरे क्षेत्र में उनका माध्य अनुपात प्रायः ५०% बैठता है।

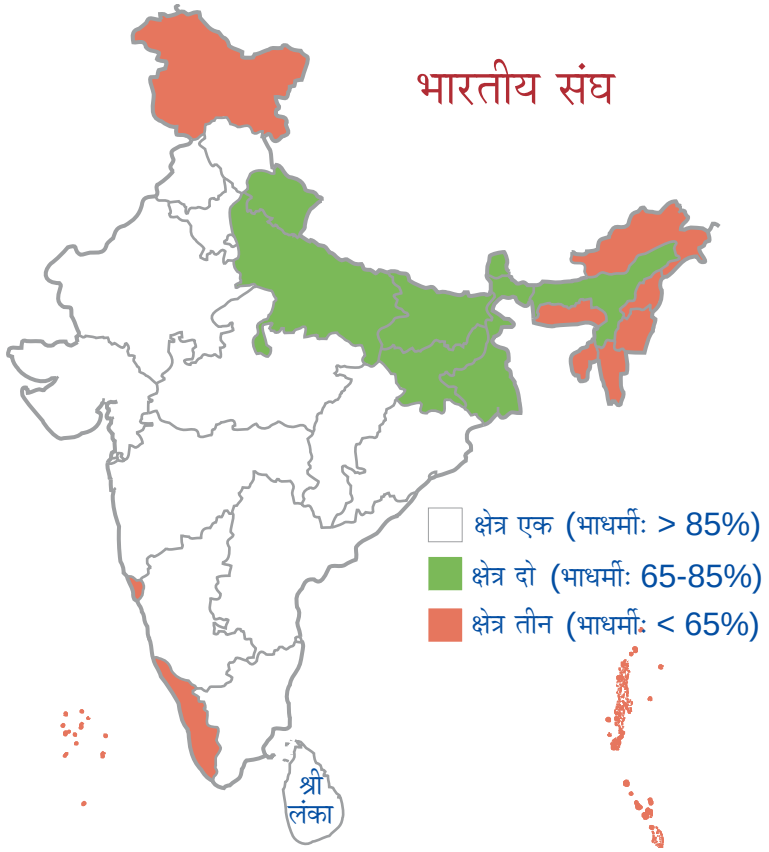

# क्षेत्र एक: जहाँ भारतीय धर्मावलम्बियों का वर्चस्व है

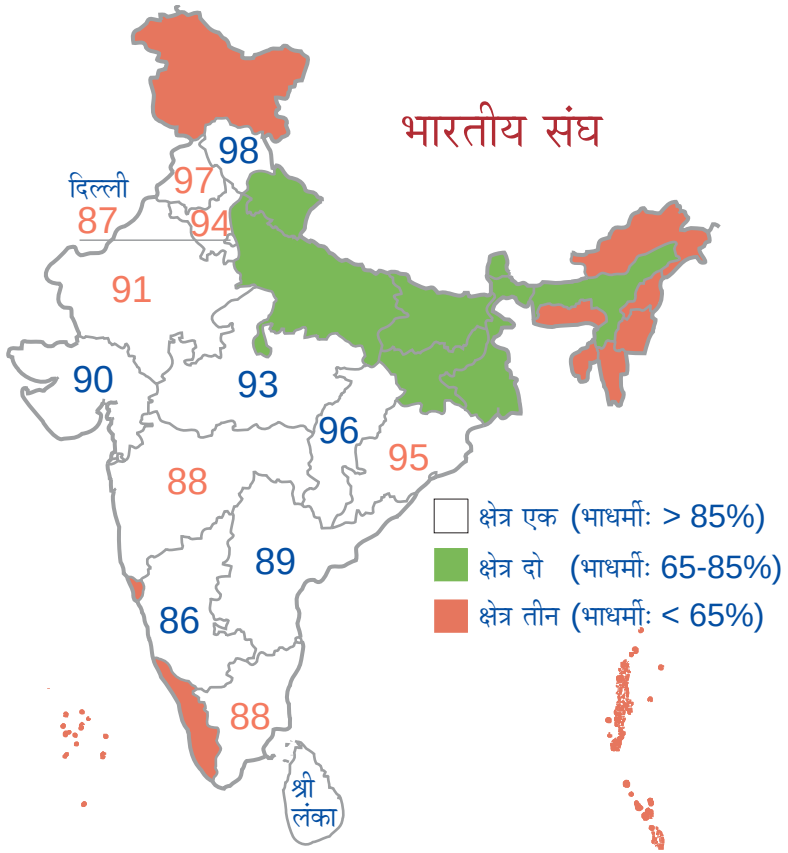


90.6 भा.धर्मियों का अनुपात, प्रतिशत में

- इस क्षेत्र में प्रायः समस्त उत्तरपश्चिमी, पश्चिमी, मध्यवर्ती एवं दक्षिणी राज्य आते हैं।
- भारतीय संघ के क्षेत्रफल का दो-तिहाई और जनसंख्या का ५७% इस क्षेत्र में पड़ता है।
- क्षेत्र में भारतीय धर्मावलम्बियों का माध्य अनुपात ९०.६% है। १९९१ में यह अनुपात ९१.१% था।
- क्षेत्र के विभिन्न राज्यों में भा. धर्मियों का अनुपात ९८ से ८६% के बीच है। उत्तरपश्चिमी एवं मध्यवर्ती राज्यों में भारतीय धर्मावलम्बी अपेक्षाकृत अधिक हैं, दक्षिणी राज्यों में उनका अनुपात कुछ न्यून है।
- १९५१ के पश्चात् के दशकों में इस क्षेत्र में भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में किंचित् ही गिरावट आई है। १९९१-२००१ के दशक में हुआ ह्रास स्वतन्त्रता के पश्चात् सर्वाधिक रहा है।
- मानचित्र में लाल रंग में दिखाये गये आँकड़े उन प्रान्तों के हैं जहाँ भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात गत दशक में ०.५ प्रतिशत अंकों से अधिक गिरा है।

# क्षेत्र-एक के ईसाई एवं मुस्लिम बाहुल्य वाले परिसीमित क्षेत्र

- इस क्षेत्र में ईसाई और मुसलमान कतिपय परिसीमित केन्द्रों में ही अधिक हैं।
- उत्तरपश्चिमी आन्ध्र प्रदेश, उत्तरी कर्नाटक, मध्य महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के पूर्व निमाड़ क्षेत्रों की एक बड़ी पट्टी है जिसमें सब स्थानों पर मुसलमानों का पर्याप्त अनुपात पाया जाता है। स्वतन्त्रतापूर्व इस पट्टी का अधिकतर भाग हैदराबाद निजाम के अधीन आती थी।
- दिल्ली, हिमाचल प्रदेश के चम्बा, पंजाब के संगरूर, हरियाणा के गुड़गाँव, राजस्थान के अलवर, भरतपुर और अजमेर, महाराष्ट्र के मुम्बई, ठाणे, नाशिक, औरंगाबाद और अकोला, आंध्र के हैदराबाद और निजामाबाद, कर्नाटक के उत्तर एवं दक्षिण कन्नड़ और कोडगु जनपदों में मुस्लिम अनुपात में तीव्र वृद्धि हुई है।
- गुजरात के डांग्स, उड़ीसा के सुंदरगढ़, अविभाजित फूलबनी एवं गंजाम और तमिलनाडु के कन्याकुमारी एवं चेंगलपट्टु जनपदों में ईसाइयों का अनुपात असामान्य गति से बढ़ा है। तटीय कर्नाटक में भी ईसाइयों का अनुपात बढ़ रहा है।

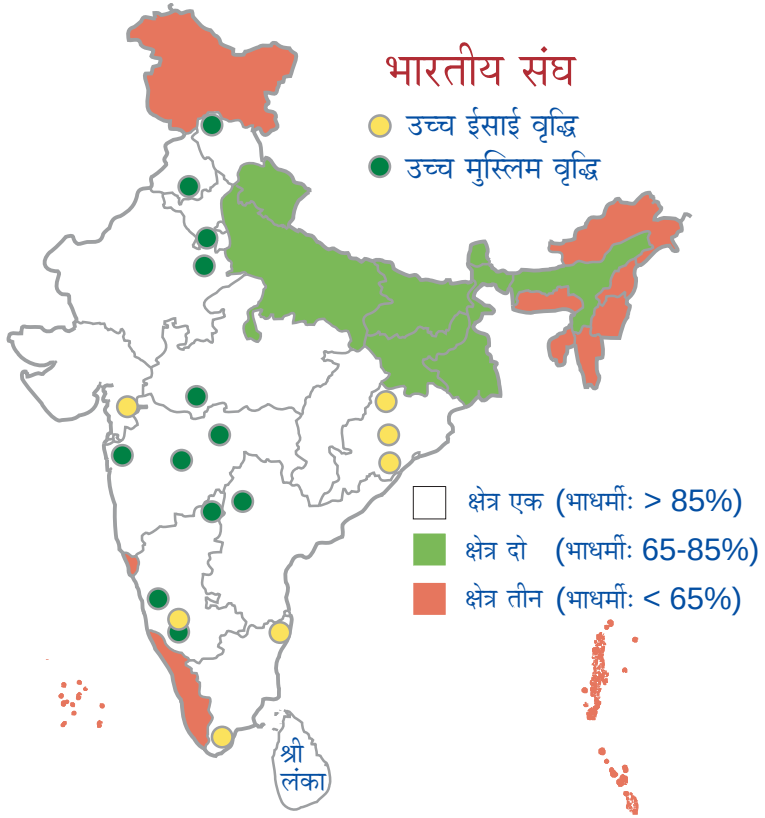

# क्षेत्र-एक में १९९१-२००१ के मध्य हुए परिवर्तन

- १९९१-२००१ के गत दशक में क्षेत्र-एक के अनेक स्थानों पर बहुत बड़े परिवर्तन हुए हैं। इनमें से कुछ का उल्लेख नीचे किया गया है।
- उड़ीसा के फूलबनी से कन्धमाल एवं गंजाम से गजपति नाम के नये जनपद निकाले गये हैं। कन्धमाल में १८ प्रतिशत और गजपति में ३३.५ प्रतिशत ईसाई हैं।
- गजपति जनपद की जनसंख्या मात्र ५.१९ लाख है। यह अविभाजित गंजाम जनपद की जनसंख्या का मात्र १४% है। यह छोटा सा जनपद ईसाई बाहुल्य की दृष्टि से ही बनाया गया प्रतीत होता है।
- कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ जनपद में मुस्लिम अनुपात तेजी से बढ़ रहा था। अब जनपद को विभाजित कर उडुपि को पृथक् किया गया है। शेष दक्षिण कन्नड़ जनपद में २२% मुस्लिम हैं।
- कर्नाटक के समस्त पश्चिमी तटवर्ती जनपदों में भारतीय धर्मावलम्बी घट रहे हैं और यह तटवर्ती पट्टी कर्नाटक के उत्तरी जनपदों से जुड़कर मध्यभारत के उच्च मुस्लिम उपस्थिति वाले क्षेत्र का भाग बनती दिख रही है।
- गुजरात के डांग्स जिले में ईसाई अनुपात ५.४३ से बड़कर ९.५१ प्रतिशत हुआ है।
- महाराष्ट्र के अकोला जनपद में मुस्लिम अनुपात तीव्रता से बढ़ रहा था। इस जनपद को विभाजित कर वाशिम को पृथक् किया गया है। शेष अकोला में १८ प्रतिशत मुस्लिम हैं। सम्पूर्ण महाराष्ट्र में मुस्लिम अनुपात १ प्रतिशत अंक से अधिक बढ़ा है और धुले जैसे जिलों में बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ है।
- वृहद् मुम्बई में १८.५ मुस्लिम हैं। १९९१-२००१ के मध्य वृहद् मुम्बई जनपद से उपनगरीय मुम्बई को पृथक् किया गया है। शेष मुम्बई जनपद में मुसलमानों का अनुपात अब २२% है।

*क्रमशः...*

# क्षेत्र-एक में १९९१-२००१ के मध्य हुए परिवर्तन

*...क्रमशः*

- आन्ध्र के हैदराबाद जनपद में मुस्लिम अनुपात अब ४१% है। शेष आन्ध्र में मुस्लिम एवं ईसाई अनुपात कुछ न्यून हुआ दिखता है। आन्ध्र में ईसाई अनुपात १९७१ तक बहुत बढ़ा था, उस समय राज्य के अनेक जनपदों में १०% तक ईसाई हो गये थे। तबसे जनगणना में उनका अनुपात घटता हुआ दिखायी देता रहा है।
- तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले में ईसाइयों का अनुपात गत दशक में २ प्रतिशत अंक बढ़कर ४४.५% हुआ है। चेंगलपट्टु जनपद में उनका अनुपात ४.५४% से बढ़कर ६.०४% हुआ है।
- दिल्ली में मुस्लिम अनुपात २ प्रतिशत अंक बढ़कर १२% हुआ है। १९५१ में वे ६% से न्यून थे।
- हरियाणा में मुस्लिम अनुपात ४.६४% से बढ़कर ५.७८% हुआ है। मेवात क्षेत्र के केन्द्र गुड़गाँव जनपद में यह अनुपात ३४.४% से बढ़कर ३७.२% हुआ है, यमुनानगर में ८.५% से १०% और पानीपत में ३.८% से बढ़कर ६.२% हुआ है। मेवात क्षेत्र में पड़ते और गुड़गाँव के साथ लगते राजस्थान के अलवर और भरतपुर जनपदों में भी गत दशक में मुसलमानों के अनुपात में १.५ प्रतिशत अंकों की वृद्धि हुई है।
- गुड़गाँव जनपद पर केन्द्रित मेव-मुस्लिम क्षेत्र के मुस्लिम बहुल उपखण्डों को पृथक् कर अब एक नया मुस्लिम बहुल जनपद बनाया जा रहा है। उत्तरपश्चिमी भारत का यह प्रथम मुस्लिम बहुसंख्यक जनपद है। इस नये जनपद का नाम सत्यमेवपुरम् रखने का प्रस्ताव था।
- पंजाब में संगरूर के अतिरिक्त लुधियाना, पटियाला और रूपनगर जनपदों में मुस्लिम अनुपात अब २% से अधिक है। अनेक जनपदों में गत दशक में मुस्लिम अनुपात दोगुना तक बढ़ा है और ईसाइयों के अनुपात में असाधारण वृद्धि हुई है।

# क्षेत्र दो: जहाँ भारतीय धर्मावलम्बी घट रहे हैं

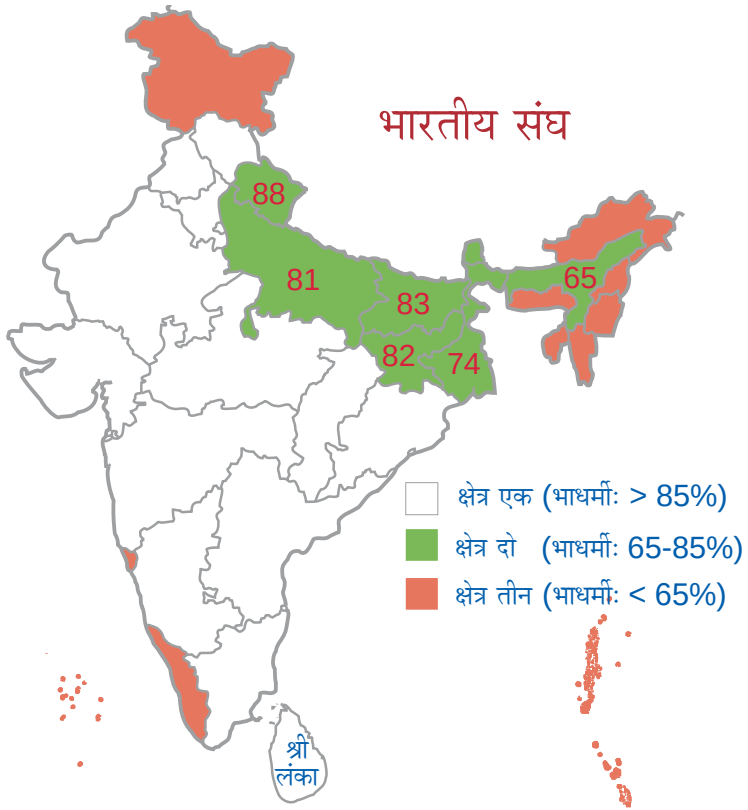


79.4 भारतीय धर्मावलम्बियों का प्रतिशत अनुपात

- अविभाजित उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल एवं असम इस क्षेत्र में आते हैं।
- यह भारत का सर्वाधिक उर्वर क्षेत्र है। भारतीय संघ के १९% क्षेत्र पर व्याप्त इस भाग में ३७% जनसंख्या का भरण होता है।
- इस क्षेत्र में भारतीय धर्मावलम्बियों का माध्य अनुपात ७९.४% है। १९९१ में उनका अनुपात ८०.६% था। १९५१ से २००१ तक के पाँच दशकों में यह अनुपात ५ प्रतिशत अंक घटा है।
- क्षेत्र में मुसलमान अब २०% हैं। ईसाई यहाँ अल्प ही हैं।
- पूर्व के राज्यों में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात विशेषतः अल्प है। उत्तरांचल में भारतीय धर्मियों का अनुपात ८८%, उत्तरप्रदेश में ८१%, बिहार में ८३%, झारखंड में ८२%, पश्चिम बंगाल में ७४% और असम में मात्र ६५% है।
- १९९१-२००१ के दशक में पश्चिम बंगाल में भा. धर्मियों का अनुपात २ प्रतिशत अंकों से और असम में ३ प्रतिशत अंकों से घटा है। असम में इस दशक का ह्रास १९२१-१९३१ को छोड़ कर जनगणना के सम्पूर्ण काल में अधिकतम रहा है।
- उत्तरांचल एवं झारखण्ड में गत दशक में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात २ प्रतिशत अंक घटा है।

# पूर्वी सीमावर्ती पट्टी: जहाँ भारतीय धर्मियों के अनुपात में तीव्र ह्रास हो रहा है

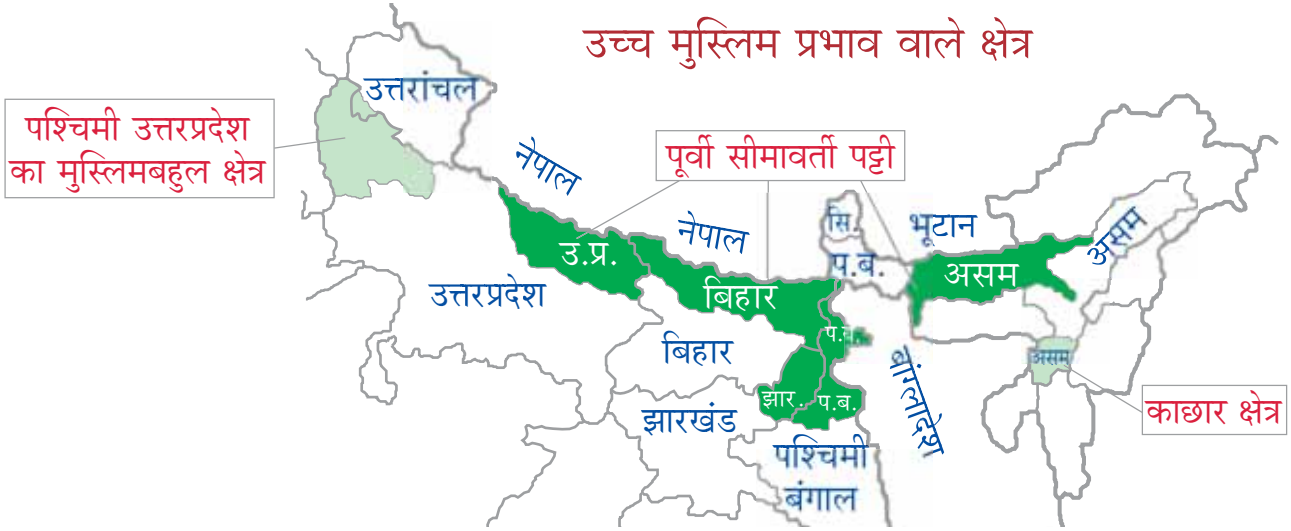


क्षेत्र दो के सीमावर्ती जनपद मिलकर एक ऐसी सीमावर्ती पट्टी बनाते हैं जहाँ भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में तीव्र ह्रास हो रहा है। यहाँ हम १९७१ तक के अविभाजित जनपदों को गिन रहे हैं। ये जनपद हैं —

- पूर्वी उत्तरप्रदेश के बहराइच, गोंडा, बस्ती, गोरखपुर एवं देवरिया जनपद।
- बिहार के चम्पारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सहरसा एवं पूर्णिया और झारखण्ड के संथाल परगना जनपद।
- पश्चिमी बंगाल के पश्चिमी दीनाजपुर, माल्दा, बीरभूम और मुर्शिदाबाद जनपद।
- असम के गोआलपारा, कामरूप, दरंग एवं नगाँव जनपद।

# उत्तरी सीमावर्ती पट्टी: बदलता अनुपात

**उत्तरी सीमावर्ती पट्टी में मुस्लिम अनुपात, 1951-2001**

| | 1951 | 1961 | 1971 | 1981 | 1991 | 2001 |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उत्तरप्रदेश | 15.40 | 16.49 | 18.45 | 19.18 | 20.47 | 20.03 |
| बिहार-झारखंड | 14.56 | 17.60 | 19.00 | 19.90 | 21.00 | 22.32 |
| प. बंगाल | 39.89 | 44.01 | 43.20 | 44.95 | 47.14 | 49.31 |
| असम | 32.42 | 33.13 | 31.89 | 34.87 | 37.15 | 40.34 |
| कुल पट्टी | 20.49 | 23.44 | 24.71 | 26.07 | 27.67 | 28.78 |

पट्टी में पड़ते जनपदों की कुल जनसंख्या में मुसलमानों का प्रतिशत भाग।

- इस पट्टी में अब मुसलमानों का अनुपात २९ प्रतिशत है। १९५१ से २००१ तक के पाँच दशकों में इस अनुपात में ८ प्रतिशत अंकों से अधिक की वृद्धि हुई है। १९९१-२००१ के दशक में इस पट्टी में मुसलमानों के अनुपात में हुई वृद्धि गत दशकों की अपेक्षा कुछ न्यून है, क्योंकि पट्टी के उत्तरप्रदेश वाले भाग में मुसलमानों का अनुपात किंचित् घटा है।
- पश्चिम बंगाल एवं असम के अनेक जनपदों में मुस्लिम अनुपात १९९१-२००१ के दशक में शीघ्रता से बढ़ा है। इस पट्टी में पड़ते असम के चार नये विभाजित जनपद धुबरी, गोआलपारा, बरपेटा और नगाँव अब मुस्लिम बहुल हैं। धुबरी में मुस्लिम अनुपात ७४.५% है। मरिगाँव प्रायः मुस्लिम बहुल है। बंगाइगाँव में इस दशक में उनका अनुपात ६ प्रतिशत अंकों से बढ़ा है। असम के काछार क्षेत्र के दो और जनपद भी अब मुस्लिम बहुल हैं। पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में ६४% मुस्लिम हैं और माल्दा एवं उत्तर दीनाजपुर प्रायः मुस्लिम बहुल हो गये हैं।

# सीमावर्ती पट्टी का पूर्वी भाग

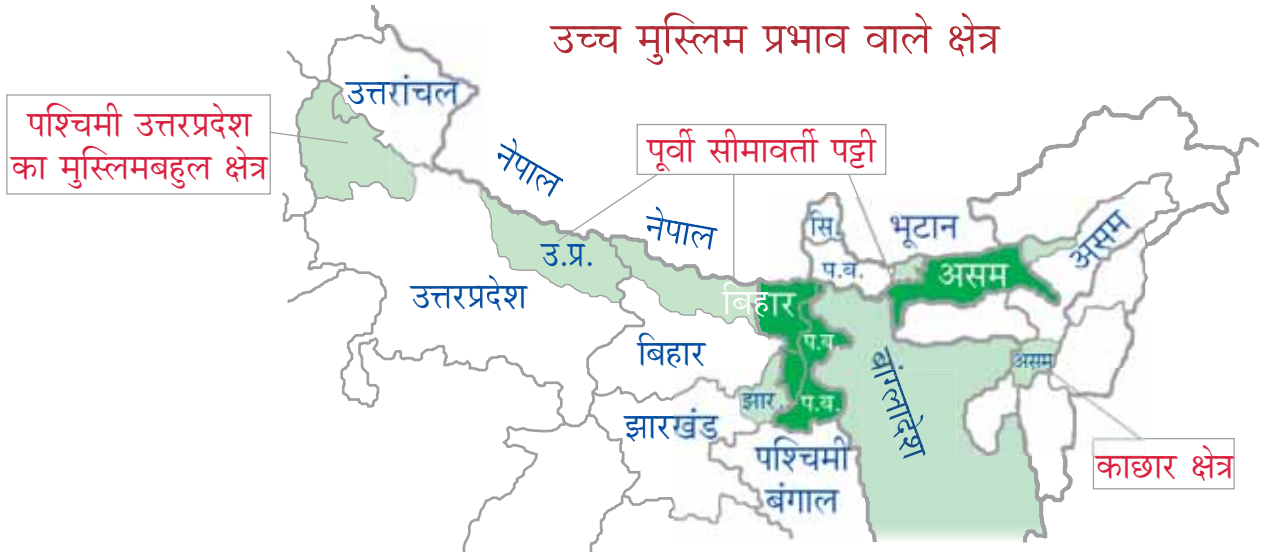


- इस सीमावर्ती पट्टी के पूर्णिया से आगे के गहरे हरे रंग मे दिखाये गये पूर्वी भाग में मुस्लिम अनुपात अब ४६% है।
- १९५१ से २००१ तक के पाँच दशकों में इस अनुपात में ११ प्रतिशत अंकों से अधिक की वृद्धि हुई है।
- इस भाग में पड़ते जिलों में मुस्लिम अनुपात इस प्रकार है –
  अररिया (४१), किशनगंज (६८), कटिहार (४३), पूर्णिया (३७), साहिबगंज (३१), पाकुड़ (३२); उत्तर दीनाजपुर (४७), दक्षिण दीनाजपुर (२४), मुर्शिदाबाद (६४), माल्दा (५०), बीरभूम (३५); बंगाइगाँव (३९), धुबरी (७४), गोआलपारा (५४), कामरूप (२५), बरपेटा (५९), नलबारी (२२), दरंग (३६), नगाँव (५१), मरिगाँव (४८)।
- असम के काछार क्षेत्र के हाईलाकंडी (५८), काछार (३६), करिमगंज (५२) जनपदों में भी मुस्लिम अनुपात बहुत ऊँचा है। ये जनपद मुस्लिम वर्चस्व वाले बांग्लादेश से होते हुए उत्तरी सीमावर्ती पट्टी के साथ जुड़ जाते हैं।

# पश्चिमी उत्तरप्रदेश का उच्च मुस्लिम वृद्धि वाला क्षेत्र

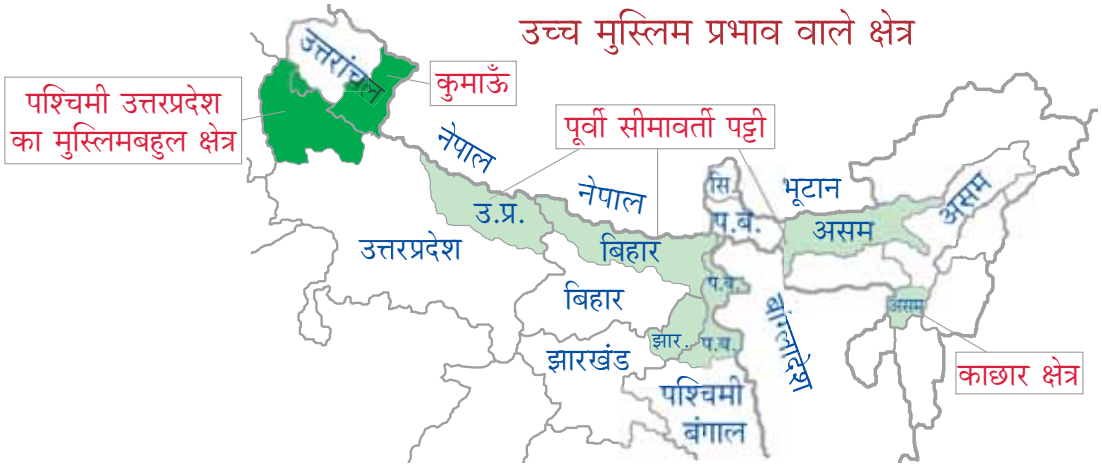


| | प. उप्र. | कुमाऊँ |
|---|---|---|
| 1951 | 29.93 | 4.24 |
| 1961 | 30.61 | 5.24 |
| 1971 | 31.17 | 5.92 |
| 1981 | 32.82 | 6.42 |
| 1991 | 36.33 | 8.24 |
| 2001 | 38.52 | 10.10 |

क्षेत्र में मुसलमानों का प्रतिशत भाग।

- इस क्षेत्र में उत्तरांचल का हरिद्वार और पश्चिमी उत्तरप्रदेश के सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर और बरेली जनपद आते हैं।
- इस पट्टी में मुसलमानों का अनुपात अब ३८.५% है। १९५१ के पश्चात् के पाँच दशकों में यह अनुपात ८.६ प्रतिशत अंकों से बढ़ा है। १९८१-९१ और १९९१-२००१ के दशक में इस अनुपात में विशेषतः तीव्र वृद्धि हुई है। इन दो दशकों में ही इस पट्टी में मुसलमानों का अनुपात प्रायः ६ प्रतिशत अंकों से बढ़ा है।
- १९८१-१९९१ में मुजफ्फरनगर और मुरादाबाद जनपदों में हुई वृद्धि विशेषतः उल्लेखनीय थी। गत दशक में भी मुजफ्फरनगर, मेरठ और सहारनपुर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।
- उत्तरांचल के कुमाऊँ क्षेत्र में गत पाँच दशकों में मुस्लिम अनुपात ४% से बढ़कर १०% तक पहुँचा है। वहाँ के ऊधमसिंह नगर में मुसलमान अब २०% से अधिक हैं। गढ़वाल क्षेत्र का हरिद्वार जनपद पश्चिमी उत्तरप्रदेश वाली पट्टी में गिना गया है। इस जनपद में गत दशक में मुसलमानों का अनुपात ३०% से बढ़कर ३३% हुआ है।

# उत्तरप्रदेश एवं उत्तरांचल की धर्मानुसार स्थिति

| | 1941 | 1951 | 1961 | 1971 | 1981 | 1991 | 2001 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उत्तर प्रदेश (अविभाजित) | 56,347 | 63,216 | 73,746 | 88,341 | 110,862 | 139,112 | 174,687 |
| | 15.43 | 14.28 | 14.63 | 15.48 | 15.93 | 17.33 | 18.18 |
| उत्तर प्रदेश | | | | | | 132,062 | 166,198 |
| | | | | | | 17.72 | 18.50 |
| उत्तरांचल | | | | | | 7,050 | 8,489 |
| | | | | | | 10.00 | 11.92 |

प्रत्येक प्रदेश के लिये पहली पंक्ति में कुल जनसंख्या सहस्रों में, दूसरी पंक्ति में प्रदेश की कुल जनसंख्या में मुसलमानों का अनुपात प्रतिशत में।

- उत्तरांचल में गत एक दशक में मुसलमानों का अनुपात प्रायः २ प्रतिशत अंकों से बढ़ा है। यह अविभाजित उत्तरप्रदेश में से इस पृथक् राज्य के गठन के उपरान्त की प्रथम जनगणना है। शेष उत्तरप्रदेश में उतना बड़ा परिवर्तन नहीं हुआ है।
- इस नये पर्वतीय प्रदेश के अपेक्षाकृत निचले हरिद्वार, ऊधमसिंह नगर और नैनीताल जनपदों में मुसलमानों का अनुपात अत्यन्त तीव्रता से बढ़ रहा है। ऊपरी जनपदों में कुछ धीमी गति से परन्तु उल्लेखनीय परिवर्तन हो रहे हैं।
- आगे हम देखेंगे कि झारखण्ड में भी बिहार की अपेक्षा कहीं बड़े परिवर्तन हुए हैं। ऐसा प्रतीत होता है की अपेक्षाकृत छोटे प्रान्तों की धर्मानुसार जनसांख्यिकी अधिक तीव्रता से परिवर्तित होती है।

# बिहार एवं झारखण्ड की धर्मानुसार स्थिति

| | 1941 | 1951 | 1961 | 1971 | 1981 | 1991 | 2001 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बिहार (अविभाजित) | 35,174 | 38,786 | 46,456 | 56,353 | 69,915 | 86,374 | 109,944 |
| | 85.51 | 87.65 | 86.46 | 85.36 | 84.82 | 84.22 | 83.08 |
| | 13.42 | 11.28 | 12.45 | 13.48 | 14.12 | 14.81 | 15.87 |
| बिहार | 26,306 | 29,089 | 34,850 | 42,127 | 52,303 | 64,530 | 82,999 |
| | 84.58 | 87.61 | 86.47 | 85.37 | 84.84 | 84.26 | 83.40 |
| | 15.32 | 12.34 | 13.48 | 14.53 | 15.09 | 15.70 | 16.53 |
| झारखण्ड | 8,868 | 9,697 | 11,606 | 14,226 | 17,612 | 21,844 | 26,946 |
| | 88.25 | 87.79 | 86.45 | 85.30 | 84.75 | 84.10 | 82.09 |
| | 7.76 | 8.09 | 9.38 | 10.35 | 11.26 | 12.18 | 13.85 |

पहली पंक्ति में कुल जनसंख्या सहस्रों में। दूसरी एवं तीसरी पंक्ति में क्रमशः भारतीय धर्मियों एवं मुसलमानों का अनुपात प्रतिशत में।

- झारखण्ड में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात गत एक दशक में २ प्रतिशत अंकों से घटा है। शेष बिहार में यह ह्रास १ प्रतिशत अंक से भी न्यून है।
- झारखण्ड में ईसाई एवं मुसलमान दोनों तीव्र गति से बढ़ रहे हैं। संथाल परगना के साहिबगंज एवं पाकुड़ जनपदों में परिवर्तन की गति अत्याधिक तीव्र है।
- साहिबगंज एवं पाकुड़ की सम्मिलित जनसंख्या में मुसलमानों का अनुपात १९९१-२००१ के गत दशक में २८.२१ से बढ़कर ३१.७४ प्रतिशत हुआ है और ईसाइयों का २.७१ से बढ़कर ६.१३ प्रतिशत।

# असम की धर्मानुसार स्थिति

| | 1901 | 1911 | 1921 | 1931 | 1941 | 1951 | 1961 | 1971 | 1981 | 1991 | 2001 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुल | 3,290 | 3,849 | 4,637 | 5,560 | 6,695 | 8,029 | 10,837 | 14,625 | 18,041 | 22,414 | 26,656 |
| भा. धर्मी | 84.55 | 83.19 | 80.36 | 75.80 | 74.30 | 73.32 | 72.27 | 72.83 | 70.53 | 68.25 | 65.38 |
| मुस्लिम | 15.03 | 16.21 | 18.74 | 22.78 | 25.13 | 24.68 | 25.30 | 24.56 | 26.52 | 28.43 | 30.92 |
| ईसाई | 0.41 | 0.59 | 0.90 | 1.42 | 0.56 | 2.00 | 2.43 | 2.61 | 2.95 | 3.32 | 3.70 |

प्रथम पंक्ति में प्रदेश की कुल जनसंख्या सहस्रों में और अन्य पंक्तियों में भारतीय धर्मियों, मुस्लिमों एवं ईसाइयों का प्रतिशत अनुपात दिया गया है।

- असम में १९०१ से २००१ के मध्य भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात ८४.५५ से घट कर ६५.३८ प्रतिशत हुआ है। मुसलमानों का अनुपात १५.०३ से बढ़ कर ३०.९२ प्रतिशत तक पहुँचा है और ईसाई ०.४१ से बढ़ कर ३.७० प्रतिशत हुए हैं।

- स्वतन्त्रतापूर्व भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में अधिकतम ह्रास १९२१ से १९३१ के मध्य हुआ था। उसके पश्चात् अब १९९१-२००१ के मध्य हुआ ३ प्रतिशत अंकों का ह्रास इस काल का अधिकतम ह्रास है। इस एक दशक में असम में भारतीय धर्मावलम्बियों का भाग ६८.२५ से घटकर ६५.३८ प्रतिशत रह गया है।

- ईसाइयों का अनुपात स्वतन्त्रता के उपरान्त प्रायः दोगुना हुआ है। कोक्राझार में १९९१-२००१ के गत दशक में ईसाई ९.८२ से बढ़ कर १३.७२ प्रतिशत हुए हैं। इसके अतिरिक्त निम्न असम के गोआलपारा, दरंग एवं सोनितपुर में ईसाई अनुपात अब ७.८७, ६.४७ एवं ६.८८ प्रतिशत है। कार्बी आंगलंग के पहाड़ी जनपद में ईसाइयों का अनुपात १९७१ के ७.९९ प्रतिशत से बढ़कर १४.४८ प्रतिशत हुआ है। उत्तर काछार जनपद में वे २६.६८ प्रतिशत हैं। पड़ोस के शिबसागर और गोलाघाट जनपदों में भी ईसाई अनुपात तीव्रता से बढ़ रहा है।

# निम्न असम के जनपदों में भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में ह्रास

| जनपद | भा.धर्मी का अनुपात | | दशवार्षिक वृद्धि |
|---|---|---|---|
| | 1991 | 2001 | प्रतिशत में |
| बंगाइगाँव | 65.04 | 59.41 | 2.35 |
| धुबरी | 28.95 | 24.94 | 5.90 |
| कोक्राझार | 70.85 | 65.92 | 5.24 |
| बरपेटा | 43.68 | 40.31 | 9.67 |
| नलबारी | 78.98 | 76.29 | 9.19 |

- बंगाइगाँव, धुबरी, कोक्राझार, बरपेटा एवं नलबारी जनपदों में १९९१-२००१ के गत दशक में भारतीय धर्मावलम्बियों की संख्या में १० प्रतिशत से भी न्यून वृद्धि हुई है। बंगाइगाँव में यह वृद्धि मात्र २.३५ प्रतिशत रही है।
- इसी दशक में बंगाइगाँव में मुसलमानों में ३१.८४ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। धुबरी में मुसलमान २९.५८ प्रतिशत एवं ईसाई ६५.५० प्रतिशत बढ़े हैं। कोक्राझार में मुसलमान १९.१५ एवं ईसाई ५८.१२ प्रतिशत बढ़े हैं। बरपेटा में इन दो समुदायों में वृद्धि क्रमशः २५.८६ एवं ४८.०३ और नलबारी में २५.२३ एवं ६८.२९ प्रतिशत रही है।
- इन जनपदों में भारतीय धर्मावलम्बियों की वृद्धि नैसर्गिक वृद्धि से कहीं न्यून है। आँकड़ों से ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है कि इन जनपदों से भारतीय धर्मावलम्बियों का पलायन-सा हुआ है।
- इन जनपदों की स्थिति विकटतम है परन्तु अनेक अन्य जनपदों में भी ऐसी ही स्थिति बनी दिखाई देती है।

# अतिवृद्धि वाले अन्य क्षेत्र: काछार एवं कोलकाता

| | कोलकाता एवं हावड़ा | काछार |
|---|---|---|
| 1951 | 13.48 | 38.49 |
| 1961 | 14.25 | 39.14 |
| 1971 | 15.85 | 39.89 |
| 1981 | 17.62 | - |
| 1991 | 19.78 | 43.02 |
| 2001 | 22.28 | 45.47 |

जनसंख्या में मुसलमानों का प्रतिशत अनुपात

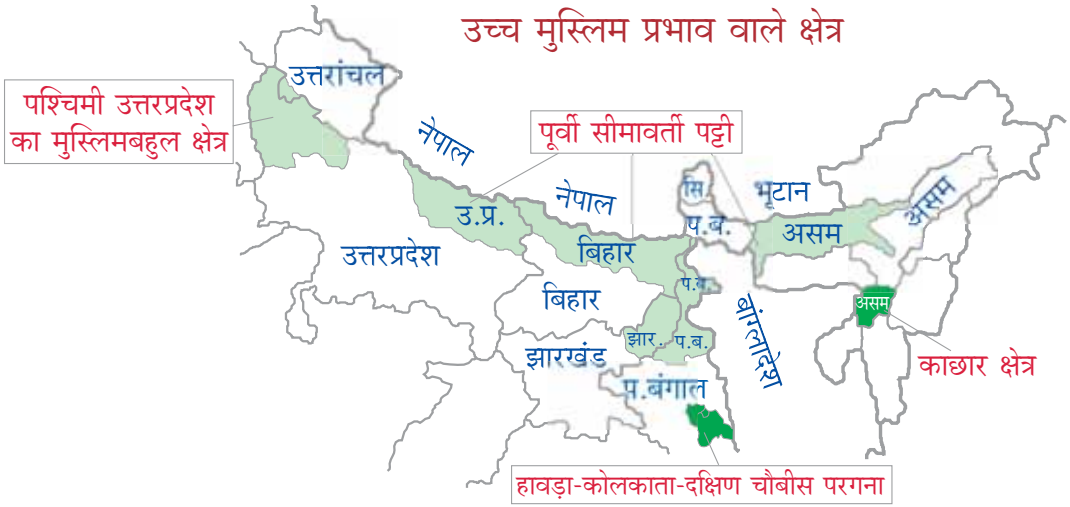


- असम के काछार क्षेत्र में मुसलमानों का अनुपात उल्लेखनीय है और तीव्रता से बढ़ रहा है। यहाँ के करिमगंज और हाईलाकंडी जनपदों में यह अनुपात क्रमशः ५८% एवं ५२% है, १९९१ में यह अनुपात ५५% एवं ४९% था।
- कोलकाता और हावड़ा जनपदों की सम्मिलित जनसंख्या में मुसलमानों का अनुपात १३.५ प्रतिशत अंकों से बढ़कर २२% हुआ है। अकेले १९९१-२००१ के दशक में यहाँ मुसलमानों के अनुपात में २.५ प्रतिशत अंकों की वृद्धि हुई है।
- साथ लगते चौबीस परगना जनपद में भी मुसलमानों का अनुपात तीव्रता से बढ़ता रहा है। दक्षिण चौबीस परगना में अब ३३.२४% मुसलमान हैं। यहाँ उनके अनुपात में गत एक दशक में ३ प्रतिशत अंकों से अधिक की वृद्धि हुई है।
- काछार और कोलकाता-हावड़ा-दक्षिण चौबीस परगना क्षेत्र दोनों मुसलिम वर्चस्व वाले बांग्लादेश से होते हुए अति मुसलिम वृद्धि वाली उत्तरी सीमावर्ती पट्टी से जुड़े हुए हैं।

# क्षेत्र-दो का ईसाई-बहुल रांची क्षेत्र

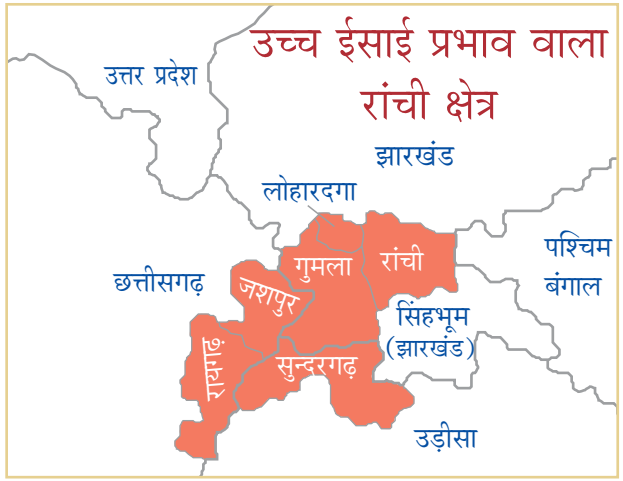


- क्षेत्र-दो में ईसाइयों का अनुपात अल्प ही है। पूरे क्षेत्र में उनका माध्य अनुपात २ प्रतिशत से न्यून बैठता है।
- बिहार का रांची, छत्तीसगढ़ का रायगढ़ और उड़ीसा का सुन्दरगढ़ जनपद मिलकर एक ऐसा परिसीमित क्षेत्र बनता है जिसमें ईसाइयों की उपस्थिति उल्लेखनीय है। इस क्षेत्र की जनसंख्या में कुल १४.५ प्रतिशत ईसाई हैं।
- १९९१-२००१ के मध्य छत्तीसगढ़ के रायगढ़ को विभाजित कर जशपुर जनपद बनाया गया है। इस जनपद में ईसाई अब २३ प्रतिशत हैं।
- अविभक्त रांची जनपद के गुमला खण्ड में ईसाइयों का अनुपात ३२ प्रतिशत है।
- रांची के लोहारदगा खण्ड में गत दशक में मुसलमानों के अनुपात में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। यहाँ उनका अनुपात १४ से बढ़कर २० प्रतिशत हुआ है। भारतीय धर्मी ८३ से घटकर ७६ प्रतिशत पर पहुँचे हैं।
- असम के उत्तर काछार हिल्स, कार्बी आंगलंग और गोलाघाट जनपदों में भी ईसाइयों का उल्लेखनीय अनुपात है। उत्तरी काछार में ईसाइयों का अनुपात गत दशक में २५ से बढ़कर २७ प्रतिशत हुआ है। निम्न असम के कोक्राझार, गोआलपारा, दरंग और सोनितपुर जनपदों में भी ईसाई पर्याप्त संख्या में हैं और वहाँ उनका अनुपात बढ़ता जा रहा है।
- रांची क्षेत्र से कुछ दूर पड़ते उड़ीसा के कन्धमाल और गजपति जनपदों में भी ईसाइयों का बड़ा अनुपात है।



policy.cpsindia@gmail.com www.cpsindia.org

# सिक्किम की धर्मानुसार जनसंख्या: १९००-२००१

| | 1900 | 1940 | 1950 | 1960 | 1971 | 1981 | 1991 | 2001 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुल | 59.01 | 121.5 | 137.7 | 162.2 | 209.8 | 316.4 | 406.5 | 540.9 |
| भारतीय धर्मी | 99.73 | 99.90 | 99.69 | 97.52 | 99.05 | 96.76 | 95.75 | 91.90 |
| मुस्लिम | 0.04 | 0.07 | 0.09 | 0.74 | 0.16 | 1.02 | 0.95 | 1.42 |
| ईसाई | 0.23 | 0.03 | 0.22 | 1.73 | 0.79 | 2.22 | 3.30 | 6.68 |

कुल जनसंख्या सहस्रों में है। अन्य पंक्तियों में कुल जनसंख्या में विभिन्न धर्मावलम्बियों का प्रतिशत अनुपात दर्शाया गया है।

- सिक्किम को क्षेत्र-दो में भौगोलिक निकटता के कारण गिना गया है। अन्यथा इस राज्य में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात क्षेत्र-एक के समान ही उच्च रहा है।
- गत दो दशकों में सिक्किम की धर्मानुसार जनसांख्यिकी में परिवर्तन होने लगे हैं। १९९१-२००१ के दशक में बड़ा परिवर्तन हुआ दिखता है। इस दशक में ईसाइयों का अनुपात प्रायः दोगुना होकर ७ प्रतिशत तक पहुँच गया है और मुसलमान १.५ प्रतिशत हो गये हैं। इस राज्य के लिये ऐसे परिवर्तन नये और महत्त्वपूर्ण हैं।
- इस काल में सिक्किम के साथ लगते पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जनपद में भी ईसाइयों का अनुपात बहुत तीव्रता से बढ़ा है और जलपाईगुड़ी में भी ईसाइयत का प्रसार होता दिख रहा है।

# क्षेत्र तीन: जहाँ भारतीय धर्मावलम्बी अल्पसंख्यक होते जा रहे हैं

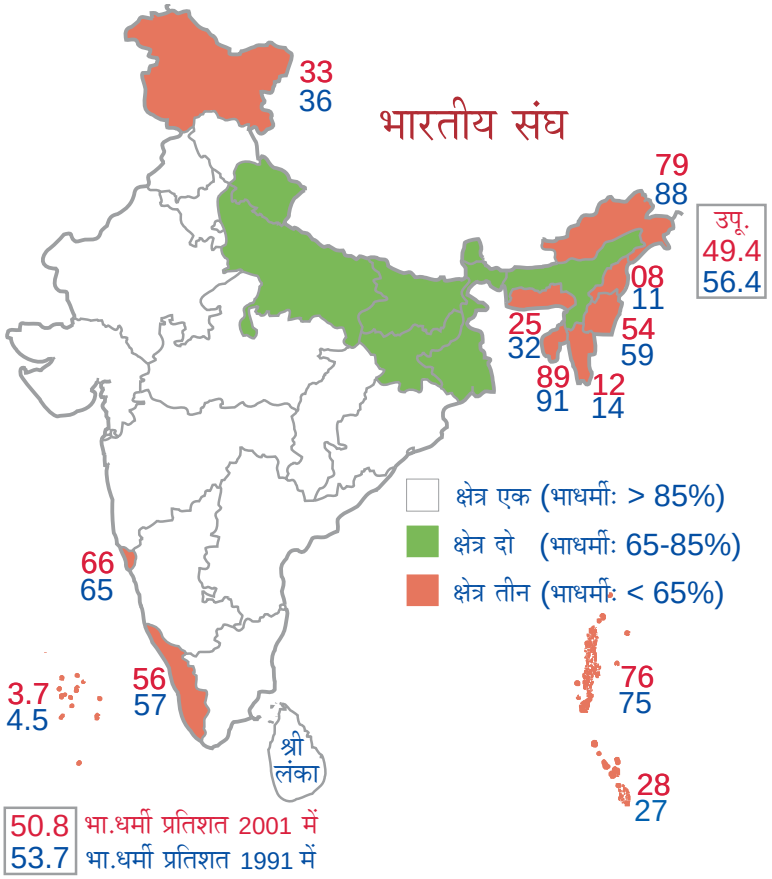


जम्मू-कश्मीर के नीले आँकड़े १९८१ के हैं। वहाँ १९९१ में जनगणना नहीं हो पायी थी।

- उत्तर में जम्मू-कश्मीर, पश्चिम में गोवा, केरल एवं लक्षद्वीप, हिन्द महासागर में दूरवर्ती अंडमान-निकोबार द्वीप और उत्तरपूर्व के राज्य इस क्षेत्र में पड़ते हैं।
- इनमें से गोवा और अण्डमान में भारतीय धर्मियों का अनुपात बढ़ रहा है। त्रिपुरा में भी १९८१ तक वे बढ़ रहे थे। अब घटने लगे हैं।
- प्रायः समस्त उत्तरपूर्व ईसाई होता जा रहा है। १९९१-२००१ के एक दशक में उनका अनुपात ३९.५% से बढ़कर ४५.५% हुआ है। उत्तरपूर्व के पाँचों राज्यों की सम्मिलित जनसंख्या में भारतीय धर्मी अब ४९.४% ही शेष हैं।
- इस दशक में क्षेत्र-३ में बड़े परिवर्तन हुए हैं। अब इस पूरे क्षेत्र में भारतीय धर्मी प्रायः अल्पसंख्यक हो गये हैं। उनका अनुपात १९९१ के ५४% से घटकर ५१% हुआ है। स्वतन्त्रतोपरान्त किसी एक दशक में यह सबसे बड़ा ह्रास है।

# जम्मू और कश्मीर

| | 1961 | 1971 | 1981 | 2001 |
|---|---|---|---|---|
| जम्मू-कश्मीर | 68.30 | 65.84 | 64.19 | 66.97 |
| कश्मीर | 94.41 | 94.00 | 94.96 | 97.16 |
| जम्मू एवं कठुआ | 10.89 | 8.74 | 5.03 | 6.31 |
| पुञ्छ | 79.46 | 73.26 | 71.39 | 74.03 |
| पुञ्छ एवं राजौरी | – | 88.85 | 89.07 | 91.92 |
| डोडा | 65.01 | 63.59 | 57.30 | 57.92 |
| ऊधमपुर | 33.87 | 32.92 | 26.23 | 25.57 |
| लेह (लद्दाख) | 45.44 | 46.66 | 46.06 | 47.40 |
| कारगिल | | | 77.91 | 80.43 |

विभिन्न क्षेत्रों की जनसंख्या में मुसलमानों का अनुपात प्रतिशत में।

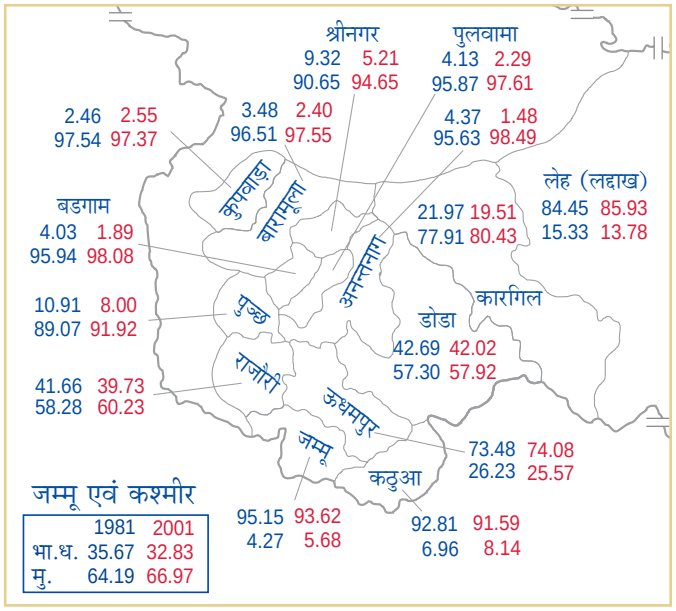


- जम्मू-कश्मीर की जनसंख्या में मात्र एक तिहाई भारतीय धर्मावलम्बी हैं। १९९१ में इस राज्य में जनगणना नहीं हो पायी थी। १९८१ से २००१ के मध्य भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात ३ प्रतिशत अंकों से घटा है।
- इस अवधि में मुसलमानों का अनुपात राज्य के प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ा है। पहले के दशकों में कश्मीर घाटी के बाहर के क्षेत्रों में उनका अनुपात घट रहा था।
- इस काल में कश्मीर घाटी प्रायः पूर्णतः मुस्लिम हो गई है। वहाँ भारतीय धर्मियों का अनुपात ५ से घटकर २.५ प्रतिशत रह गया है। घाटी में उनकी कुल संख्या अब उनकी १९८१ की संख्या की अपेक्षा न्यून है। वे १.५८ लाख से घटकर १.५२ लाख हुए हैं। इसी अवधि में घाटी की कुल जनसंख्या ३१ लाख से बढ़ कर ५५ लाख हुई है।

# जम्मू और कश्मीर में भारतीय धर्मियों की स्थिति

**भारतीय धर्मियों की कुल जनसंख्या, २००१**

| | कुल | महिलायें | 0-6 के बच्चे | कामकाजी | साक्षर |
|---|---|---|---|---|---|
| कुपवाड़ा | 16,585 | 1,351 | 368 | 14,933 | 15,311 |
| बारामूला | 28,091 | 7,539 | 1,690 | 17,480 | 18,715 |
| श्रीनगर | 62,680 | 10,732 | 2,744 | 47,516 | 48,623 |
| बडगाम | 11,919 | 2,889 | 688 | 8,136 | 8,122 |
| पुलवामा | 14,974 | 4,913 | 838 | 8,451 | 8,970 |
| अनंतनाग | 17,364 | 3,820 | 946 | 12,075 | 12,286 |
| कश्मीर घाटी | 151,613 | 31,244 | 7,174 | 108,591 | 111,377 |
| भारतीय धर्मी | | 20.61 | 4.73 | 71.62 | 73.46 |
| समस्त धर्मी | | 47.47 | 14.36 | 32.90 | 41.84 |

विभिन्न समूहों की जनसंख्या। अंतिम दो पंक्तियों में कुल जनसंख्या में सम्बन्धित समूह का प्रतिशत अनुपात।

- कश्मीर घाटी में जो १.५२ लाख भारतीय धर्मावलम्बी शेष हैं उनका बड़ा भाग वयस्क कामकाजी पुरुषों का है। उनमें मात्र ३१ सहस्र महिलायें और ७ सहस्र ०-६ आयु के बच्चे हैं। इनमें से २० सहस्र महिलायें एवं ४ सहस्र बच्चे घाटी की ४८ सहस्र सिख जनसंख्या का भाग हैं। प्रायः १ लाख हिन्दुओं में तो मात्र १० सहस्र महिलायें और ३ सहस्र बच्चे हैं।
- इन आँकड़ों से स्पष्ट है कि भारतीय धर्मावलम्बियों के परिवार अब कश्मीर घाटी में नगण्य हैं। जो कुछ गिने-चुने परिवार वहाँ हैं उनमें से अधिकतर सिखों के हैं। अन्यथा कामकाज के सम्बन्ध में वहाँ रहने को बाध्य कतिपय वयस्क भारतीय धर्मावलम्बी पुरुष ही वहाँ रह रहे हैं।

# गोवा की धर्मानुसार जनसंख्या: १९००-२००१

| | 1900 | 1940 | 1950 | 1960 | 1971 | 1981 | 1991 | 2001 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुल | 475.5 | 540.9 | 547.4 | 590.0 | 795.1 | 1,008 | 1,170 | 1,348 |
| भारतीय धर्मी | 44.22 | 53.03 | 56.16 | 60.04 | 62.70 | 64.55 | 64.89 | 66.48 |
| मुस्लिम | 0.94 | 1.52 | 1.61 | 1.89 | 3.33 | 4.10 | 5.25 | 6.84 |
| ईसाई | 54.84 | 45.45 | 42.23 | 38.07 | 33.97 | 31.35 | 29.85 | 26.68 |

प्रथम पंक्ति में कुल जनसंख्या सहस्रों में। अन्य पंक्तियों में भारतीय धर्मियों, मुसलमानो एवं ईसाइयों का प्रतिशत अनुपात।

- गोवा में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात ६६% है, शेष २७% ईसाई और ७% मुसलमान हैं।
- ईसाई १९०० में ५५% थे, अब २००१ में उनका अनुपात २७% रह गया। इस काल में भारतीय धर्मावलम्बी ४४% से बढ़कर ६६% हुए हैं और मुसलमान १% से बढ़कर ७% तक पंहुचे हैं।
- गोवा उन कतिपय राज्यों में से एक है जहाँ बीसवीं शताब्दी में भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। निकट भविष्य में यहाँ का धर्मानुसार जनसांख्यिकी स्वरूप कर्नाटक और महाराष्ट्र राज्यों के गोवा के साथ लगते क्षेत्रों के समान हो जाने की सम्भावना है।
- कर्नाटक के तटवर्ती जनपदों के अनुरूप ही गोवा में मुसलमानों के अनुपात में उल्लेखनीय वृद्धि होने लगी है। १९९१-२००१ के गत दशक में उनके अनुपात में हुई १.६ प्रतिशत अंकों की वृद्धि अब तक की सर्वाधिक वृद्धि है।

# केरल की धर्मानुसार जनसंख्या: १९०१-२००१

| | 1901 | 1941 | 1951 | 1961 | 1971 | 1981 | 1991 | 2001 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुल | 6,396 | 11,032 | 13,549 | 16,904 | 21,347 | 25,454 | 29,099 | 31,841 |
| भारतीय धर्मी | 68.90 | 62.40 | 61.61 | 60.87 | 59.45 | 58.18 | 57.35 | 56.29 |
| मुस्लिम | 17.28 | 17.08 | 17.53 | 17.91 | 19.50 | 21.25 | 23.33 | 24.70 |
| ईसाई | 13.82 | 20.52 | 20.86 | 21.22 | 21.05 | 20.56 | 19.32 | 19.02 |

प्रथम पंक्ति में कुल जनसंख्या सहस्रों में। अन्य पंक्तियों में भारतीय धर्मियों, मुसलमानो एवं ईसाइयों का प्रतिशत अनुपात।

- यहाँ भारतीय धर्मियों का अनुपात ५६% है, मुसलमान और ईसाई क्रमशः २५% एवं १९% हैं।
- १९०१ से २००१ के मध्य भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात १३ प्रतिशत अंक घटा है। प्रति दशक उनका अनुपात प्रायः १.२ प्रतिशत अंकों से घटता रहा है। गत १९९१-२००१ के दशक में भी इतना ही ह्रास हुआ है।
- बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ईसाइयों का अनुपात ७.५% अंकों से बढ़ा था, १९६१ से २००१ के दशकों में उनके अनुपात में कुछ ह्रास हुआ है। मुसलमानों का अनुपात १९६१ तक प्रायः स्थिर था, अगले चार दशकों में इसमें ७ प्रतिशत अंकों की वृद्धि हुई है। इस प्रकार इस शताब्दी में दोनों धर्म-समूहों को ६-७% अंकों का लाभ हुआ है। ईसाइयों के भाग में यह वृद्धि शताब्दी के पूर्वार्द्ध में और मुसलमानों के अनुपात में शताब्दी के उत्तरार्द्ध में घटी है।
- भारतीय धर्मियों के अनुपात में बीसवीं शताब्दी में हुए इस ह्रास से पूर्व अठारहवीं एवं उन्नीसवीं सदी में भी उनका अनुपात घटता रहा है। अठारहवीं शताब्दी में यह ह्रास प्रदेश में इस्लाम के बलपूर्वक प्रसार से हुआ और उन्नीसवीं में ईसाइयत के। तीन शताब्दियों में इस तटीय प्रदेश में भारतीय धर्मावलम्बी अपना वर्चस्व पूर्णतः खो बैठे हैं।
- केरल तट से हटकर पड़ने वाले लक्षद्वीप प्रदेश में मुसलमानों का वर्चस्व है। इस प्रदेश में उनका अनुपात बीसवीं सदी के मध्य १००% से कुछ घटकर ९४% हुआ था। अब यह पुनः ९६% तक बढ़ गया है।

# केरल के विभिन्न क्षेत्रों की धर्मानुसार स्थिति

| | 1911 | 1941 | 1951 | 1961 | 1971 | 1981 | 1991 | 2001 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोषिक्कोट्-कण्णूर | 74.54 | 73.09 | 69.98 | 66.73 | 64.35 | 61.99 | 59.93 | 58.53 |
| मलप्पुरम् | 46.77 | 44.30 | 44.05 | 40.43 | 34.07 | 3.12 | 30.29 | 29.24 |
| पालक्काट्-त्रिशूर | 72.00 | 68.16 | 68.81 | 68.56 | 67.71 | 65.99 | 64.66 | 63.85 |
| कोट्टयम्-कोच्चि | 54.67 | 47.62 | 47.05 | 47.49 | 47.3 | 47.51 | 48.91 | 48.20 |
| तिरुवनन्तपुरम्-कोल्लम् | 73.02 | 67.57 | 66.54 | 66.90 | 66.56 | 66.16 | 66.43 | 66.03 |

तालिका में दिये गये आँकड़े क्षेत्र की जनसंख्या में भारतीय धर्मावलम्बियों का प्रतिशत अनुपात दर्शाते हैं। कोषिक्कोट्-कण्णूर क्षेत्र में कासरगोड एवं वयनाट्, कोट्टयम्-कोच्चि में इदुक्की और तिरुवनन्तपुरम्-कोल्लम् में आलप्पुषा एवं पत्तनमत्तिट्टा जनपद भी सम्मिलित हैं।

- दक्षिणी केरल के तिरुवनन्तपुरम्-कोल्लम् एवं कोट्टयम्-कोच्चि क्षेत्रों में बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में ७ प्रतिशत अंकों का ह्रास हुआ, और ईसाई अनुपात में प्रायः इतनी ही वृद्धि हुई। कोट्टयम्-कोच्चि क्षेत्र में १९४१ में ही भारतीय धर्मावलम्बी अल्पसंख्यक हो गये थे। उसके पश्चात् उनके अनुपात में उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ।
- केन्द्रीय पालक्काट्-त्रिशूर क्षेत्र में १९११-१९४१ के मध्य भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में ४ प्रतिशत अंकों का ह्रास हुआ, और स्वतन्त्रता-प्राप्ति के उपरान्त पाँच दशकों में पुनः उतना ही ह्रास हुआ है।
- साठ के दशक में कोषिक्कोट् एवं पालक्काट् जनपदों को विभाजित कर मुस्लिम-बहुल मलप्पुरम् जनपद बनाया गया था। १९५१-२००१ के मध्य इस जनपद में भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में १५ प्रतिशत अंकों का ह्रास हुआ है। जनसंख्या में उनका भाग अब मात्र ३०% रह गया है। वृद्धि मुख्यतः मुसलमानों में हुई है। उनका अनुपात अब ६८.५% है।
- उत्तरी कोषिक्कोट्-कण्णूर क्षेत्र में भारतीय धर्मावलम्बियों का भाग १९५१ के पश्चात् ११.५ प्रतिशत अंक घटा है। यहाँ मुसलमानों के अनुपात में ६.५ और ईसाईयों के अनुपात में ५ प्रतिशत अंकों की वृद्धि हुई है।

# अण्डमान-निकोबार की धर्मानुसार जनसांख्यिकी

| | 1911 | 1941 | 1961 | 1971 | 1981 | 1991 | 2001 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अण्डमान-निकोबार | 26.46 | 33.77 | 63.55 | 115.1 | 188.7 | 280.7 | 356.2 |
| | 80.55 | 73.24 | 60.08 | 63.51 | 65.84 | 68.45 | 70.11 |
| अण्डमान | 72.46 | 58.88 | 70.53 | 72.95 | 73.54 | 75.10 | 75.75 |
| निकोबार | 96.73 | 97.82 | 24.88 | 22.82 | 25.86 | 27.48 | 28.03 |
| निकोबार में ईसाई | 1.21 | 0.03 | 72.53 | 74.63 | 71.20 | 69.65 | 66.90 |

प्रथम पंक्ति में द्वीपसमूह की कुल जनसंख्या सहस्रों में। अगली तीन पंक्तियों में भारतीय धर्मियों का प्रतिशत अनुपात। अंतिम पंक्ति में निकोबार जनपद में ईसाइयों का प्रतिशत अनुपात।

- हिन्द महासागर में सुदूर स्थित अण्डमान-निकोबार द्वीपसमूह में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात १९०१ के ८१% से घटकर १९६१ में ६०% रह गया था। अगले दशकों में यह अनुपात कुछ बढ़ा और अब २००१ में ७०% हुआ है।
- भारतीय धर्मियों के अनुपात में यह वृद्धि केवल अण्डमान में हुई है। वहाँ वे १९६१ के ७०% से बढ़कर ७५% हुए हैं।
- निकोबार द्वीपसमूह में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात विभाजन के आसपास के दशकों में तीव्रता से घटा था। १९४१ में वे वहाँ की जनसंख्या का ९८% थे, १९६१ में उनका अनुपात २५% रह गया। तब से उनका अनुपात प्रायः इतना ही रहा है। शेष जनसंख्या ईसाई हो गई है।
- १९९१-२००१ के गत दशक में निकोबार द्वीपसमूह में ईसाई अनुपात कुछ घटा है। परन्तु मुसलमानों का अनुपात १९९१ के २.८७ से बढ़कर ५.०७ प्रतिशत हुआ है।
- निकोबार द्वीप भारतवर्ष के धुर दक्षिण में स्थित हैं। अत्यन्त नौसैनिक महत्त्व के इस क्षेत्र की धर्मानुसार जनसांख्यिकी में वैसा ही आमूल परिवर्तन हुआ है जैसा हम धुर उत्तरपूर्व के सीमावर्ती राज्यों में देखते हैं।

# उत्तरपूर्व की धर्मानुसार जनसंख्या

| | 1901 | 1931 | 1941 | 1951 | 1981 | 1991 | 2001 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुल | 980 | 1,610 | 1,920 | 2,230 | 6,710 | 9,130 | 11,790 |
| भा. धर्मी | 91.2 | 80.7 | 89.9 | 69.2 | 62.6 | 56.4 | 49.4 |
| मुस्लिम | 6.6 | 8.7 | 8.7 | 8.5 | 4.4 | 4.7 | 5.2 |
| ईसाई | 2.2 | 10.6 | 1.4 | 22.3 | 33.0 | 39.0 | 45.4 |

कुल जनसंख्या सहस्रों में, अन्य पंक्तियों में विभिन्न धर्मियों का प्रतिशत अनुपात।

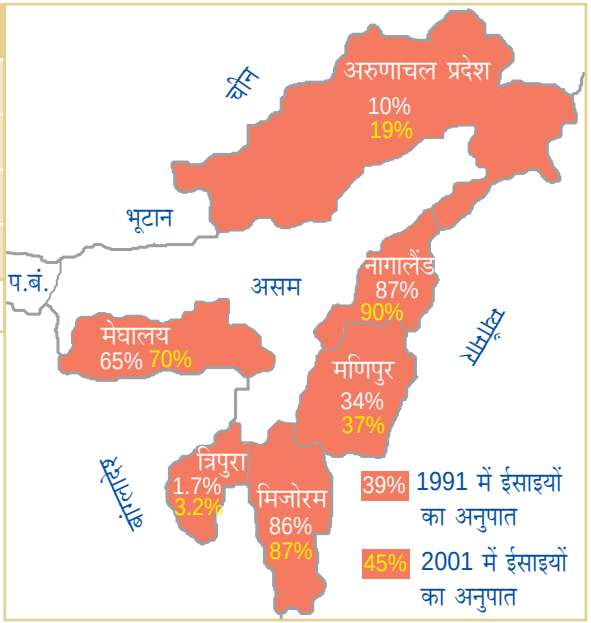


- उत्तरपूर्वी राज्य ब्रह्मपुत्र घाटी को घेरे हुए एक उच्च पर्वतीय प्राचीर के रूप में स्थित हैं। १९०१ में इस क्षेत्र की जनसंख्या में ९१% भारतीय धर्मावलम्बी थे और मात्र २% ईसाई। अब २००१ में भारतीय धर्मावलम्बी ४९.४% हैं और ईसाई ४५.४%। १९९१-२००१ के मात्र एक दशक में ईसाई अनुपात ६.४% अंकों से बढ़ा है।
- इस क्षेत्र में ईसाइयत का प्रसार मुख्यतः स्वतन्त्रता के पश्चात् के दशकों में हुआ है। १९४१ में यहां ९०% भारतीय धर्मी गिने गए थे, १९३१ की जनगणना में जब अनेक वनवासी जातियों को सामूहिक स्तर पर ईसाई मान लिया गया था तब भी भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात ८१% पाया गया था। १९५१ में यह अनुपात ६९% रह गया था। १९४१-१९५१ वाले दशक के पश्चात् १९९१-२००१ के गत दशक में हुआ ह्रास अधिकतम है।
- इस क्षेत्र में भारतीय धर्मियों का अनुपात और अधिक घटा हुआ नहीं दिखता तो केवल इसलिए कि त्रिपुरा और केन्द्रीय मणिपुर के लोग ईसाई बनना स्वीकार नहीं कर रहे। इन प्रदेशों में शताब्दियों तक सशक्त वैष्णव राज्य चलते रहे हैं। नागालैण्ड, मिजोरम एवं मेघालय और मणिपुर के बाह्य जनपदों में भारतीय धर्मावलम्बी अब प्रायः नगण्य रह गए हैं।

# त्रिपुरा की धर्मानुसार जनसंख्या: १९०१-२००१

| | 1901 | 1941 | 1951 | 1961 | 1971 | 1981 | 1991 | 2001 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुल | 173.3 | 513.0 | 639.0 | 1,142 | 1,556 | 2,053 | 2,757 | 3,199 |
| भा. धर्मी | 73.77 | 75.84 | 77.74 | 78.98 | 92.31 | 92.04 | 91.19 | 88.84 |
| मुस्लिम | 26.15 | 24.09 | 21.44 | 20.14 | 6.68 | 6.75 | 7.13 | 7.95 |
| ईसाई | 0.08 | 0.06 | 0.82 | 0.88 | 1.01 | 1.21 | 1.69 | 3.20 |

कुल जनसंख्या सहस्रों में, अन्य पंक्तियों में विभिन्न धर्मावलम्बियों का प्रतिशत अनुपात।

- त्रिपुरा एवं अरुणाचल प्रदेश का जनसांख्यिकी स्वरूप क्षेत्र के अन्य राज्यों से कुछ भिन्न है।
- त्रिपुरा इस क्षेत्र का एकमात्र ऐसा राज्य है जहाँ अब तक ईसाइयत का बड़ा प्रभाव नहीं दिखाई देता। १९९१ में यहाँ की जनसंख्या में ईसाई मात्र १.७% थे। १९९१-२००१ के गत दशक में उनका अनुपात प्रायः दोगुना होकर ३.२% पर पहुँचा है।
- त्रिपुरा भारतीय संघ के उन कतिपय राज्यों में से एक है जहाँ भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में स्पष्ट वृद्धि हुई है। १९०१ में वे जनसंख्या का ७४% थे, अब २००१ में ८९% हैं। अधिकतर वृद्धि १९६१-७१ के दशक में हुई है।
- १९८१ से भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में कुछ ह्रास प्रारम्भ हुआ था। १९९१-२००१ के दशक में यह प्रवृत्ति तीव्र हुई है। इस एक दशक में भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में २ प्रतिशत अंकों से अधिक का ह्रास हुआ है और ईसाई एवं मुस्लिम दोनों के ही अनुपात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

# अरुणाचल प्रदेश की धर्मानुसार जनसंख्या: १९६१-२००१

| | 1961 | 1971 | 1981 | 1991 | 2001 |
|---|---|---|---|---|---|
| कुल | 336.6 | 467.5 | 631.8 | 864.6 | 1,098 |
| भा. धर्मी | 99.19 | 99.03 | 94.87 | 88.33 | 79.40 |
| मुस्लिम | 0.30 | 0.18 | 0.80 | 1.38 | 1.88 |
| ईसाई | 0.51 | 0.79 | 4.32 | 10.29 | 18.72 |

कुल जनसंख्या सहस्रों में। अन्य पंक्तियों में विभिन्न धर्मावलम्बियों का प्रतिशत अनुपात।

- अरुणाचल प्रदेश साठ के दशक के उपरान्त नागरिक प्रशासन में आया। उससे पूर्व यह क्षेत्र उत्तरपूर्वी सीमा एजेंसी (नेफा) के नाम से सैनिक प्रशासन के अधीन था।
- अरुणाचल प्रदेश के लिये १९६१ से पूर्व के आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं। १९६१ एवं १९७१ की जनगणना में वहाँ ईसाई नगण्य थे। १९७१ से १९९१ के दो दशकों में ईसाइयों का अनुपात १०% हो गया था। अब १९९१-२००१ के दशक में यह प्रायः दोगुना बढ़कर १९% हुआ है। गत दशक के सबसे बड़े परिवर्तनों में से यह एक है।
- अब लोअर सुबनशिरी जनपद में ईसाई २५% हैं, पापुम पारे में ३०% और तिराप में ५० प्रतिशत। १९९१ में तिराप में ईसाइयों का भाग मात्र १८ प्रतिशत था। अनेक अन्य जनपदों में ऐसे ही बड़े परिवर्तन हुए हैं।
- स्वतन्त्रतोपरान्त पहले कुछ दशकों में इस प्रदेश में ईसाइयत का प्रसार अवरुद्ध रहा था। ऐसा प्रतीत होता है कि वह अवरोध अब समाप्त हो गया है। अब वहाँ की जनसंख्या में ईसाइयों के अनुपात में सतत वृद्धि की प्रक्रिया तीव्रता से प्रारम्भ हो गयी है। यह राज्य भी अब नागालैंड, मिजोरम, मणिपुर के बाह्य जनपदों एवं मेघालय के कुछ भागों के समान ईसाइयत के सम्पूर्ण वर्चस्व की दिशा में चल निकला है।

# उत्तरपूर्वी राज्यों में ईसाईधर्म का प्रसार

| | 1901 | 1931 | 1941 | 1951 | 1971 | 1981 | 1991 | 2001 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नागालैंड | 0.59 | 12.81 | 0.0 | 46.05 | 66.77 | 80.22 | 87.47 | 89.97 |
| मणिपुर | 0.02 | 2.33 | 5.02 | 11.84 | 26.03 | 29.68 | 34.12 | 37.31 |
| मिजोरम | 0.05 | 47.52 | 0.00 | 90.52 | 86.07 | 83.81 | 85.73 | 86.97 |
| मेघालय | 6.16 | 15.71 | 0.19 | 24.66 | 46.98 | 52.61 | 64.58 | 70.25 |

विभिन्न राज्यों की जनसंख्या में ईसाइयों का प्रतिशत अनुपात।

- १९०१ में मेघालय के अतिरिक्त अन्य सब राज्यों में ईसाई नगण्य थे, मेघालय में उनका अनुपात ६% था। १९३१ में नागालैण्ड एवं मेघालय में १०-१५% ईसाई हो गए थे और मिजोरम की प्रायः आधी जनसंख्या ईसाइयों में गिनी गई थी। परन्तु १९४१ की जनगणना में इन राज्यों में प्रायः नगण्य ईसाई पाए गए थे।
- १९४१-५१ के दशक में अनेक राज्यों में ईसाइयों के अनुपात में अकस्मात् वृद्धि हुई। इस एक दशक में मिजोरम की प्रायः सम्पूर्ण और नागालैंड की आधी जनसंख्या ईसाई हो गई।
- १९९१ तक नागालैंड में ईसाइयों का स्पष्ट वर्चस्व हो चुका था, मिजोरम में तो १९५१ से ही ऐसी स्थिति बन गई थी। १९९१-२००१ के गत दशक में नागालैंड में ईसाइयों के अनुपात में २ प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है।
- मेघालय में ईसाई अनुपात अपेक्षाकृत धीमी गति से बढ़ा है। १९९१ में वहाँ ६५% ईसाई थे। १९९१-२००१ में उनका अनुपात ७०% से ऊपर पहुँच गया है। अरुणाचल प्रदेश के पश्चात् यह इस क्षेत्र का सबसे बड़ा परिवर्तन है।
- मणिपुर में ईसाई ३७% हैं। गत दशक में उनका अनुपात ३ प्रतिशत अंकों से बढ़ा है। राज्य के बाह्य जिले प्रायः पूरे ईसाई हो गए हैं। भारतीय धर्मावलम्बी अविभक्त मणिपुर केन्द्रीय जिले के बिष्णुपुर, थौबाल एवं इम्फाल खण्डों में रह गए हैं। यह क्षेत्र पूर्वकाल में मणिपुर के वैष्णव राज्य का केन्द्र था।

# भारत की धर्मानुसार जनसांख्यिकी: पुनरवलोकन

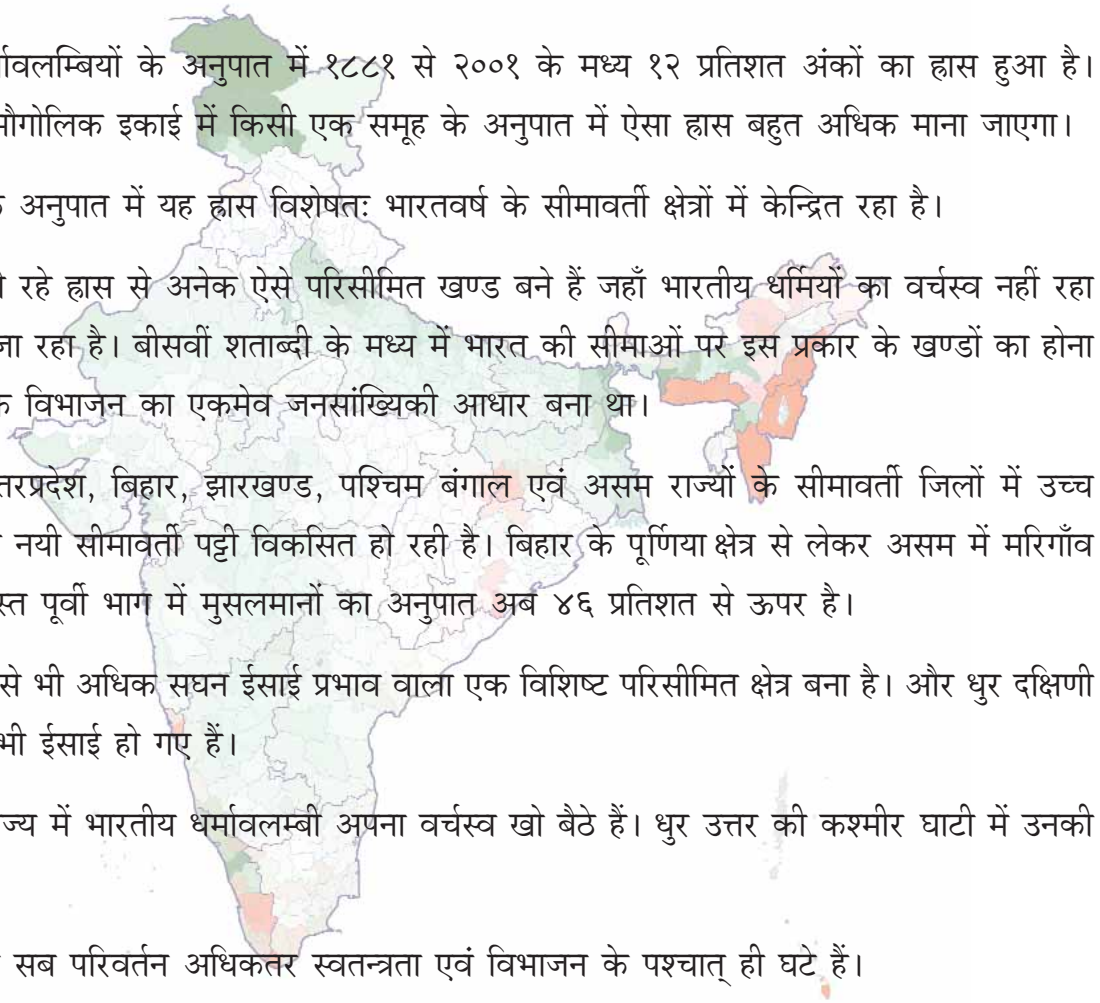

- भारतवर्ष में भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में १८८१ से २००१ के मध्य १२ प्रतिशत अंकों का ह्रास हुआ है। भारतवर्ष जैसी सुगठित भौगोलिक इकाई में किसी एक समूह के अनुपात में ऐसा ह्रास बहुत अधिक माना जाएगा।
- भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में यह ह्रास विशेषतः भारतवर्ष के सीमावर्ती क्षेत्रों में केन्द्रित रहा है।
- सीमाक्षेत्रों में तीव्रता से हो रहे ह्रास से अनेक ऐसे परिसीमित खण्ड बने हैं जहाँ भारतीय धर्मियों का वर्चस्व नहीं रहा अथवा तीव्रता से घटता जा रहा है। बीसवीं शताब्दी के मध्य में भारत की सीमाओं पर इस प्रकार के खण्डों का होना ही १९४७ में भारतवर्ष के विभाजन का एकमेव जनसांख्यिकी आधार बना था।
- अब भारतीय संघ के उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल एवं असम राज्यों के सीमावर्ती जिलों में उच्च मुस्लिम प्रभाव वाली एक नयी सीमावर्ती पट्टी विकसित हो रही है। बिहार के पूर्णिया क्षेत्र से लेकर असम में मरिगाँव तक के इस पट्टी के समस्त पूर्वी भाग में मुसलमानों का अनुपात अब ४६ प्रतिशत से ऊपर है।
- उत्तरपूर्वी सीमाओं पर इससे भी अधिक सघन ईसाई प्रभाव वाला एक विशिष्ट परिसीमित क्षेत्र बना है। और धुर दक्षिणी सीमा पर निकोबार द्वीप भी ईसाई हो गए हैं।
- पश्चिमी तट पर केरल राज्य में भारतीय धर्मावलम्बी अपना वर्चस्व खो बैठे हैं। धुर उत्तर की कश्मीर घाटी में उनकी उपस्थिति नगण्य है।
- सीमाक्षेत्रों में होने वाले ये सब परिवर्तन अधिकतर स्वतन्त्रता एवं विभाजन के पश्चात् ही घटे हैं।

# भारत की धर्मानुसार जनसांख्यिकी: १९९१-२००१ के मध्य हुए परिवर्तन

- सम्पूर्ण भारतवर्ष में भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में इस दशक में गत बारह दशकों की प्रवृत्ति के अनुरूप ही १ प्रतिशत अंक से अधिक का ह्रास हुआ है।
- भारतीय संघ के भीतर इस वर्ष हुआ प्रायः १ प्रतिशत अंक का ह्रास स्वतन्त्रतोपरान्त अधिकतम रहा है।
- भारतीय संघ में अब भारतीय धर्मावलम्बियों का भाग विभाजन के पूर्व १९४१ में उनके भाग से न्यून है।
- पूर्वी सीमावर्ती पट्टी के राज्यों में से पश्चिम बंगाल एवं असम में इस बार मुस्लिम अनुपात असाधारण बढ़ा है। असम के छः जिलों में अब मुस्लिम बहुसंख्या में है। यहाँ इस दशक में हुए परिवर्तन अभूतपूर्व हैं।
- असमेतर उत्तरपूर्वी राज्यों में इस दशक में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात ७ प्रतिशत अंकों से घटा है। यह स्वतन्त्रतोपरान्त दशकों का सबसे बड़ा ह्रास है। अरुणाचल प्रदेश अब पड़ोसी राज्यों के समान ईसाइयत के वर्चस्व की दिशा में चल निकला है। मेघालय में भी बड़े परिवर्तन हुए हैं।
- केरल में वहाँ की दीर्घकालिक प्रवृत्ति के अनुरूप भारतीय धर्मियों का अनुपात १.२ प्रतिशत अंक घटा है।
- हरियाणा में भारतीय धर्मियों के अनुपात में इस बार हुआ १ प्रतिशत अंक का ह्रास उत्तरपश्चिम के राज्यों में किसी नयी प्रवृत्ति की ओर इंगित करता है। महाराष्ट्र में भी इस बार बड़ा ह्रास हुआ है। इन दोनों प्रदेशों के कुछ विशिष्ट जनपदों में बहुत बड़े परिवर्तन हुए हैं। सिक्किम में ईसाइयत के तीव्र प्रसार की एक नयी प्रवृत्ति प्रारम्भ हुई दिखती है।
- जम्मू-कश्मीर में मुसलमानों का अनुपात प्रदेश के प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ा है। कश्मीर घाटी में अब भारतीय धर्मावलम्बियों की कुल संख्या १९८१ से न्यून है और भारतीय धर्मावलम्बी परिवारों की संख्या वहाँ अब नगण्य रह गयी है।

# विश्व के विभिन्न क्षेत्रों एवं देशों की धर्मानुसार जनसांख्यिकी

- हमने बीसवीं सदी में विश्व के विभिन्न महाद्वीपों, क्षेत्रों एवं देशों की धर्मानुसार जनसांख्यिकी में हुए परिवर्तन का आकलन भी किया है।
- इस आकलन के लिए हमने "वर्ल्ड क्रिस्चियन एन्साइक्लोपीडिया" नामक संकलन का उपयोग किया है। यह संकलन उन अध्येताओं का है जो धर्मानुसार जनसांख्यिकी के विषय पर "एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका" के लिए लिखते हैं।
- यह संकलन मुख्यतः विश्व में ईसाईधर्म के प्रसार में संलग्न विभिन्न धर्मप्रचारक संगठनों की सुविधा के लिए किया गया है। अतः इस संकलन के आँकड़ों का प्रयोग करने से पूर्व हमें इन्हें पुनर्व्यवस्थित करना पड़ा है। इस प्रक्रिया का वर्णन इस विषय पर हमारी मूल पुस्तक "रिलीजियस डेमोग्राफी ऑफ इण्डिया" में विस्तार से किया गया है।

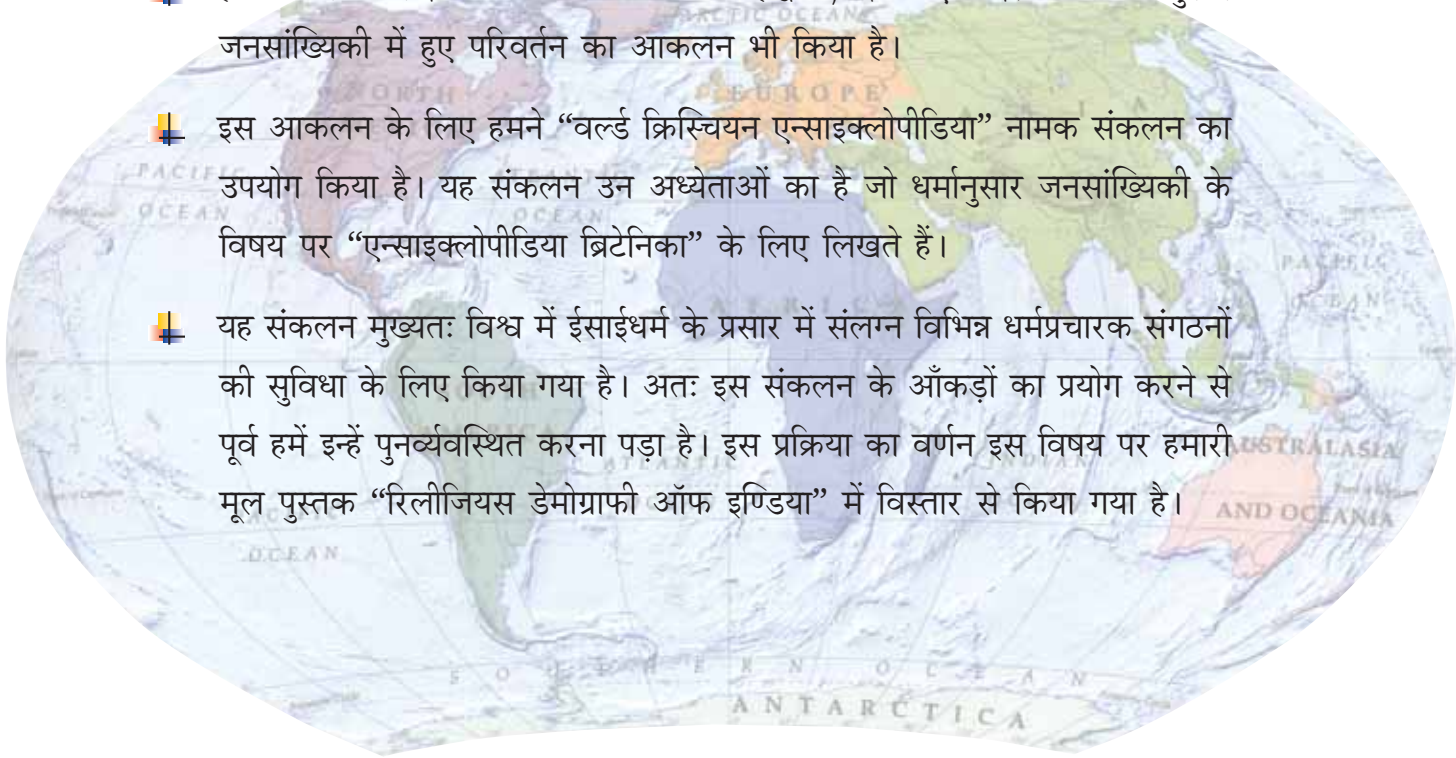

# विश्व की धर्मानुसार जनसांख्यिकी का बदलता स्वरूप

**विश्व की जनसंख्या का धर्मानुसार स्वरूप**

| | 1900 | 1970 | 2000 |
|---|---|---|---|
| कुल जनसंख्या | 1,616 | 3,686 | 6,043 |
| ईसाई | 34.35 | 37.04 | 33.96 |
| मुस्लिम | 12.40 | 15.65 | 20.08 |
| भारतीय धर्मी | 13.47 | 13.92 | 15.09 |
| पूर्व एशियाई | 31.33 | 25.91 | 23.62 |
| दक्षिणपूर्व एशियाई | 3.42 | 4.77 | 4.63 |
| अफ्रीकी धर्मी | 3.96 | 2.02 | 1.90 |
| यहूदी | 0.76 | 0.40 | 0.24 |
| अन्य | 0.32 | 0.28 | 0.48 |

कुल जनसंख्या दस लाख में। अन्य पंक्तियों में विभिन्न धर्मियों का विश्व में प्रतिशत अनुपात।

- बीसवीं शताब्दी में विश्व में ईसाइयों का अनुपात ३५% के आसपास रहा है। इन सौ वर्षों में ईसाईधर्म का यूरोप एवं अमरीका के बाहर बहुत प्रसार हुआ है। अब विश्व के ईसाइयों का प्रायः एक चौथाई अफ्रीका एवं एशिया में है।
- विश्व की जनसंख्या में मुसलमानों का भाग गत शताब्दी में १२% से बढ़कर २०% हो गया है।
- भारतीय एवं दक्षिणपूर्व-एशियाई धर्मों के अनुयायियों का अनुपात प्रायः स्थिर रहा है।
- पूर्वएशियाई धर्मों के अवलम्बियों का अनुपात ८ प्रतिशत अंकों से घटा है। चीन की जनसंख्या का अन्य एशियाई एवं अफ्रीकी देशों की अपेक्षा कम गति से बढ़ना इस ह्रास का प्रमुख कारण है।
- अफ्रीका की जनसंख्या बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में तीव्रता से बढ़ी है। तथापि विश्व की जनसंख्या में मूल अफ्रीकीधर्मों के अनुयायियों का अनुपात आधे से न्यून रह गया है।
- यहूदियों का विश्व में भाग बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में उनके भाग का मात्र एक तिहाई रह गया है। २००० में यहूदियों की कुल संख्या १९०० के प्रायः समान ही है।

# अफ्रीका का आमूल परिवर्तन

**अफ्रीका का धर्मानुसार स्वरूप**

| | 1900 | 1970 | 2000 |
|---|---|---|---|
| कुल जनसंख्या | 107 | 355 | 781 |
| ईसाई | 7.97 | 38.78 | 44.81 |
| मुस्लिम | 32.03 | 40.15 | 40.43 |
| अफ्रीकी धर्मी | 59.63 | 21.02 | 14.73 |

जनसंख्या दस लाख में, अन्य पंक्तियों में विभिन्न धर्मियों का प्रतिशत अनुपात।

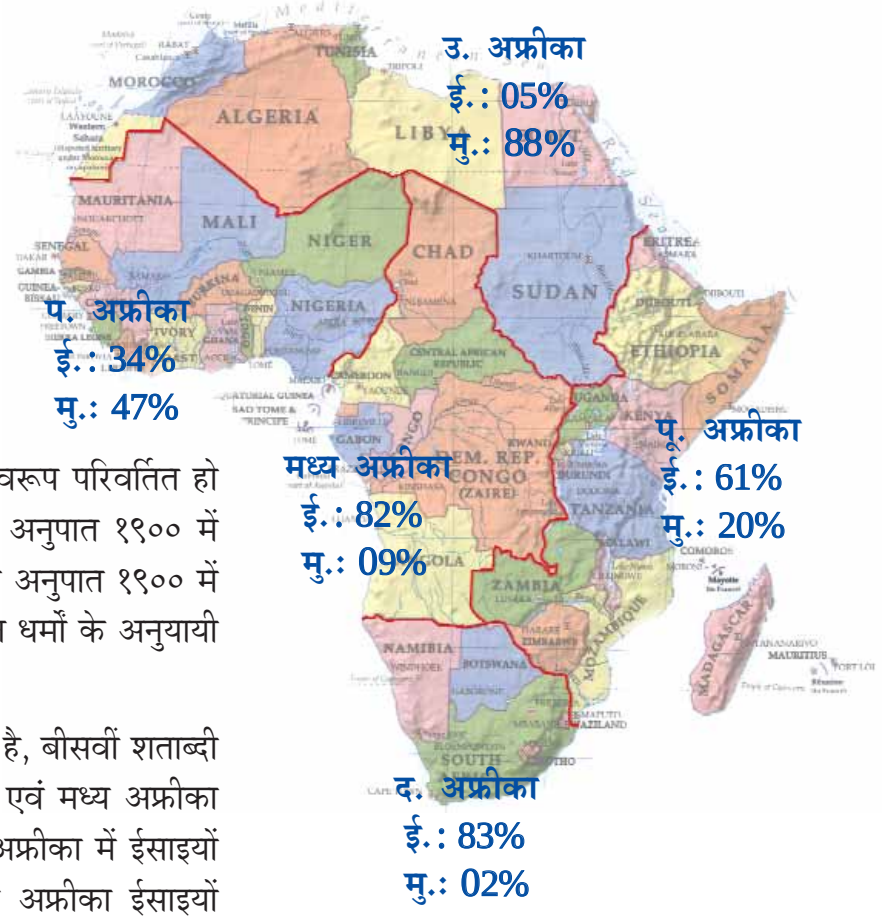


- बीसवीं शताब्दी में अफ्रीका का धर्मानुसार स्वरूप परिवर्तित हो गया है। वहाँ की जनसंख्या में ईसाइयों का अनुपात १९०० में ८% था, २००० में ४५% है। मुसलमानों का अनुपात १९०० में ३२% था, अब ४०.५% है। अफ्रीका के मूल धर्मों के अनुयायी ६०% से घटकर १५% रह गये हैं।
- उत्तरी अफ्रीका तो शताब्दियों से मुस्लिम रहा है, बीसवीं शताब्दी में यहाँ उनका वर्चस्व और बढ़ा है। दक्षिणी एवं मध्य अफ्रीका में ८०% से अधिक ईसाई हो गए हैं। पूर्वी अफ्रीका में ईसाइयों का अनुपात ६०% से अधिक है। पश्चिमी अफ्रीका ईसाइयों और मुसलमानों में बंट गया है, इस क्षेत्र के उत्तरी भागों में मुसलमानों का वर्चस्व है और दक्षिणी भागों में ईसाइयों का।

# एक सम्पूर्ण महाद्वीप का धर्मान्तरण

ईसाई धर्मप्रवर्तन के वैश्विक प्रयासों की बीसवीं शताब्दी की प्रमुख विजयगाथा अफ्रीका ही है। इस विजयगाथा का स्मरण करते हुए पोप जॉन पाल ने १९९१ में दीपावली के शुभ दिवस पर दिल्ली में एक ईसाई प्रार्थना सभा को सम्बोधित करते हुए अपने प्रेरणा संदेश में कहा –

> ईसवी सम्वत् के पहले सहस्राब्द में हमने ईसा के क्रॉस को यूरोप की धरती पर सुदृढ़ता से रोपा, और अब दूसरे सहस्राब्द में हमने इसे अमरीका एवं अफ्रीका की धरती पर वैसी ही सुदृढ़ता से रोप दिया है। मेरी कामना है कि ईसा के तीसरे सहस्राब्द में इस विस्तृत एवं जीवन्त एशियाई महाद्वीप पर ईसा में विश्वास रखने वालों का एक विशाल समूह उपजे। ...एशिया में चर्च इस संदेश को गम्भीरतापूर्वक स्वीकार करे, जिससे यह सुनिश्चित हो पाए कि समस्त जन ईसा में जीवन प्राप्त करें और गहन आस्था से सम्पन्न हों। हमारे प्रभु यीशु के आशीर्वाद से ऐसा सम्भव हो। आमीन।



policy.cpsindia@gmail.com www.cpsindia.org

# विश्व में ईसाईधर्म का प्रसार

- विश्व के कुल ईसाइयों का ७३% भाग विश्व के उन क्षेत्रों में है जहाँ यूरोपीय मूल के लोग बसे हैं। शेष २७% ईसाई एशिया एवं अफ्रीका में हैं। इसके विपरीत १९०० में विश्व के ९५% ईसाई यूरोपीय मूल के थे।
- १९०० में एशिया और अफ्रीका में २.८ करोड़ ईसाई थे, आज २००० में उनकी संख्या ५४.८ करोड़ है।
- एशिया के १९.८ करोड़ ईसाइयों में से ६.८ करोड़ फिलिपीन में हैं और ४.५ करोड़ भारतीय क्षेत्र में। इनके अतिरिक्त २.१ करोड़ ईसाई इण्डोनेशिया और प्रायः इतने ही दक्षिण कोरिया में हैं। दक्षिण कोरिया की प्रायः ४०% जनसंख्या ईसाई हो गई है, परन्तु एशिया में कुल मिलाकर ईसाई धर्मप्रसार के प्रयास बहुत सफल नहीं हुए हैं।
- एशियाई ईसाइयों का प्रायः चौथा भाग भारत में है। फिलीपीन के पश्चात् भारत में उनकी संख्या सर्वाधिक है।
- चीन में ईसाई नगण्य हैं।

**विश्व में ईसाइयों की उपस्थिति**

| | 1900 | 1970 | 2000 |
|---|---|---|---|
| कुल ईसाई | 555 | 1,366 | 2,052 |
| यूरोप, अमरीका एवं | 527 | 1,146 | 1,504 |
| ऑस्ट्रेलिया आदि | (94.99) | (83.87) | (73.29) |
| अफ्रीका | 8.5 | 138 | 350 |
| | (1.54) | (10.09) | (17.06) |
| एशिया | 19 | 83 | 198 |
| | (3.47) | (6.04) | (9.65) |
| अफ्रीका एवं एशिया | 28 | 221 | 548 |
| | (5.01) | (16.13) | (26.71) |

ईसाइयों की कुल संख्या दस लाख में। कोष्ठकों में दिये गये आँकड़े विश्व के कुल ईसाइयों का प्रतिशत अनुपात।



policy.cpsindia@gmail.com www.cpsindia.org

# विश्व में इस्लाम का प्रसार

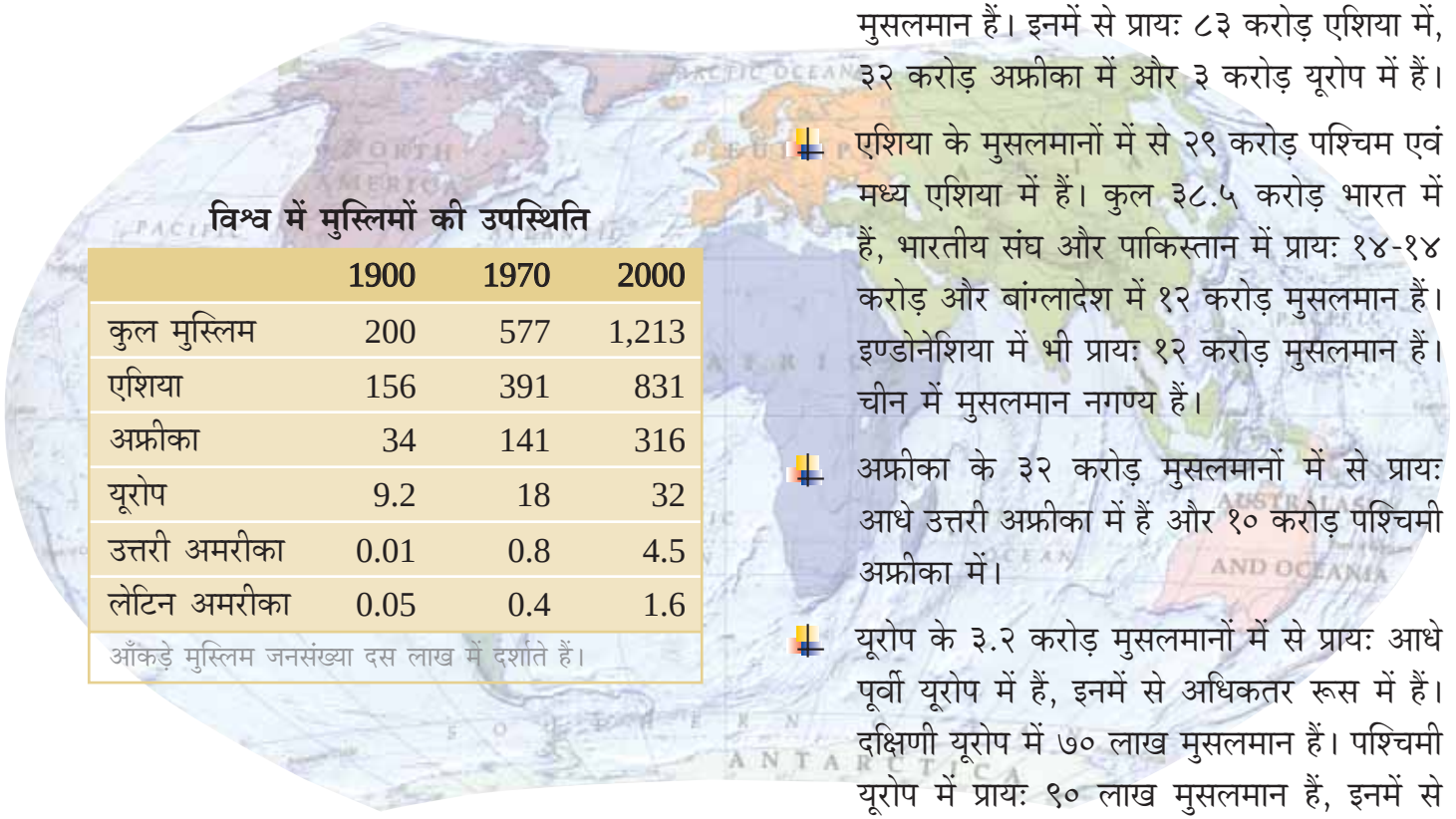

**विश्व में मुस्लिमों की उपस्थिति**

| | 1900 | 1970 | 2000 |
|---|---|---|---|
| कुल मुस्लिम | 200 | 577 | 1,213 |
| एशिया | 156 | 391 | 831 |
| अफ्रीका | 34 | 141 | 316 |
| यूरोप | 9.2 | 18 | 32 |
| उत्तरी अमरीका | 0.01 | 0.8 | 4.5 |
| लेटिन अमरीका | 0.05 | 0.4 | 1.6 |

आँकड़े मुस्लिम जनसंख्या दस लाख में दर्शाते हैं।

- अब सन् २००० में विश्व में कुल १२१.३ करोड़ मुसलमान हैं। इनमें से प्रायः ८३ करोड़ एशिया में, ३२ करोड़ अफ्रीका में और ३ करोड़ यूरोप में हैं।
- एशिया के मुसलमानों में से २९ करोड़ पश्चिम एवं मध्य एशिया में हैं। कुल ३८.५ करोड़ भारत में हैं, भारतीय संघ और पाकिस्तान में प्रायः १४-१४ करोड़ और बांग्लादेश में १२ करोड़ मुसलमान हैं। इण्डोनेशिया में भी प्रायः १२ करोड़ मुसलमान हैं। चीन में मुसलमान नगण्य हैं।
- अफ्रीका के ३२ करोड़ मुसलमानों में से प्रायः आधे उत्तरी अफ्रीका में हैं और १० करोड़ पश्चिमी अफ्रीका में।
- यूरोप के ३.२ करोड़ मुसलमानों में से प्रायः आधे पूर्वी यूरोप में हैं, इनमें से अधिकतर रूस में हैं। दक्षिणी यूरोप में ७० लाख मुसलमान हैं। पश्चिमी यूरोप में प्रायः ९० लाख मुसलमान हैं, इनमें से ३७ लाख जर्मनी में और ४२ लाख फ्रांस में हैं। ब्रिटेन में कोई १२ लाख मुसलमान हैं।

# विभिन्न क्षेत्रों के मूल धर्मावलम्बियों में ह्रास

- विश्व की कुल जनसंख्या में मूलधर्मावलम्बियों का अनुपात बीसवीं शताब्दी के मध्य ७ प्रतिशत अंक घटा है।
- शताब्दी के प्रारम्भ में ओशिएनिया की जनसंख्या में प्रायः २० प्रतिशत मूलधर्मावलम्बी थे। अब वे समाप्तप्रायः हो चुके हैं।
- अफ्रीका की जनसंख्या में मूलधर्मावलम्बियों का अनुपात ६० से घट कर मात्र १५ प्रतिशत रह गया है।
- एशिया में मूलधर्मावलम्बियों का अनुपात ११ प्रतिशत अंक घटा है। वे महाद्वीप की जनसंख्या का ८२ प्रतिशत हुआ करते थे, अब ७१ प्रतिशत हैं। यह ह्रास मुख्यतः दक्षिण एशिया और दक्षिणपूर्व एशिया में हुआ है। इन क्षेत्रों में ईसाईयत एवं इस्लाम का पर्याप्त प्रसार हुआ है। पूर्वी एशिया में तो वहाँ के मूलधर्मावलम्बियों का अनुपात कुछ बढ़ा ही है। वे अब वहाँ की जनसंख्या का ९६ प्रतिशत हैं।
- एशिया में अब भी मूलधर्मावलम्बियों का वर्चस्व है। विश्व के मूलधर्मावलम्बियों का अधिकांश इस महाद्वीप में है। विश्व के कुल मूलधर्मावलम्बियों का ८० प्रतिशत तो अकेले भारत एवं चीन में ही हैं।

**विश्व में विभिन्न मूल धर्मावलम्बियों की उपस्थिति**

| | 1900 | 1970 | 2000 |
|---|---|---|---|
| कुल | 844 | 1,720 | 2,734 |
| | (52.22) | (46.64) | (45.24) |
| ओशिएनिया | 1.1 | 0.13 | 0.23 |
| | (19.36) | (0.70) | (0.83) |
| अफ्रीका | 64 | 75 | 115 |
| | (59.63) | (21.02) | (14.73) |
| एशिया | 779 | 1,645 | 2,619 |
| | (81.53) | (76.65) | (71.14) |

विभिन्न क्षेत्रों में मूलधर्मावलम्बियों की कुल संख्या दस लाख में दिखायी गयी है। कोष्ठकों में दिये गये आँकड़े उस क्षेत्र की जनसंख्या में मूलधर्मावलम्बियों का प्रतिशत अनुपात दर्शाते हैं।

# निष्कर्षः भारत का आमूल परिवर्तन तो नहीं हुआ

- बीसवीं शताब्दी में विश्व के कतिपय देशों और विशेषतः अफ्रीका में हुए धर्मान्तरण के परिप्रेक्ष्य में भारत की स्थिति बहुत चिन्ताजनक नहीं दिखती।
- ईसाईधर्म एवं इस्लाम दोनों का बीसवीं शताब्दी में विश्व के अनेक नए क्षेत्रों में प्रसार हुआ है। इस प्रसार का विशेष सघन प्रभाव अफ्रीकी महाद्वीप और एशिया के कुछ अपेक्षाकृत छोटे देशों पर हुआ है।
- अफ्रीका के लोग अपने मूल अफ्रीकी धर्मों से बहुत सीमा तक च्युत कर दिए गए हैं।
- एशिया में दक्षिण कोरिया एवं इण्डोनेशिया जैसे देशों की धर्मानुसार जनसांख्यिकी का स्वरूप पूर्णतः परिवर्तित हो गया है।
- दूसरी ओर चीन जैसी प्राचीन सभ्यता ने अपने धार्मिक स्वरूप को किञ्चित् भी परिवर्तित नहीं होने दिया है। इसी प्रकार पश्चिमी एशिया, उत्तरी अफ्रीका एवं यूरोप की अपेक्षाकृत नई सभ्यताएँ अपनी नवस्थापित आस्थाओं से च्युत नहीं हुई हैं।
- भारतवर्ष अफ्रीका के समान अपनी सहज आस्थाओं से पूर्णतः विमुख तो नहीं हुआ, परन्तु हम चीन के समान स्थिर भी नहीं रहे। चीन में तो ईसाई पाँव नहीं जमा पाये हैं, और वहाँ आज मुसलमानों की संख्या बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में उनकी संख्या से न्यून है।

*क्रमशः...*

# निष्कर्ष: भारतवर्ष अप्रभावित भी नहीं रहा

- भारत बीसवीं शताब्दी में विश्व में हुए धर्मान्तरण के प्रयासों से अप्रभावित नहीं रहा।
- १८८० से २००० के मध्य भारतवर्ष की जनसंख्या में मुसलमानों का अनुपात १० प्रतिशत से अंकों से कुछ अधिक बढ़कर ३० प्रतिशत से ऊपर हो गया है और ईसाई १ प्रतिशत अंक से कुछ अधिक बढ़कर २ प्रतिशत से ऊपर पहुँचे हैं।
- इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि मुसलमानों एवं ईसाइयों के अनुपात में वृद्धि कुछ परिसीमित क्षेत्रों में केन्द्रित रही है। परिसीमित क्षेत्रों में भारतीय धर्मावलम्बियों से इतर समूहों की सघन उपस्थिति बीसवीं शताब्दी के मध्य में भारतवर्ष के विभाजन का कारण बनी।
- भारत के अतिरिक्त विश्व के कतिपय देशों को ही आधुनिक काल में इस प्रकार का धर्म-आधारित विभाजन झेलना पड़ा है। ऐसे अधिकतर देश अफ्रीका में हैं, और अब इण्डोनेशिया भी इनमें जुड़ गया है।
- भारतीय संघ के भीतर गत चार-पाँच दशकों में मुसलमानों के अनुपात में सघन वृद्धि वाले नए परिसीमित सीमावर्ती क्षेत्र विकसित हुए हैं।
- ईसाइयों के अनुपात में वृद्धि भी कतिपय धुर सीमावर्ती क्षेत्रों में केन्द्रित रही है। इनमें से कुछ क्षेत्रों में अब ईसाइयों का वर्चस्व स्थापित हो चुका है।

*क्रमशः...*

# निष्कर्ष: पूर्वाञ्चल की विकट परिस्थिति

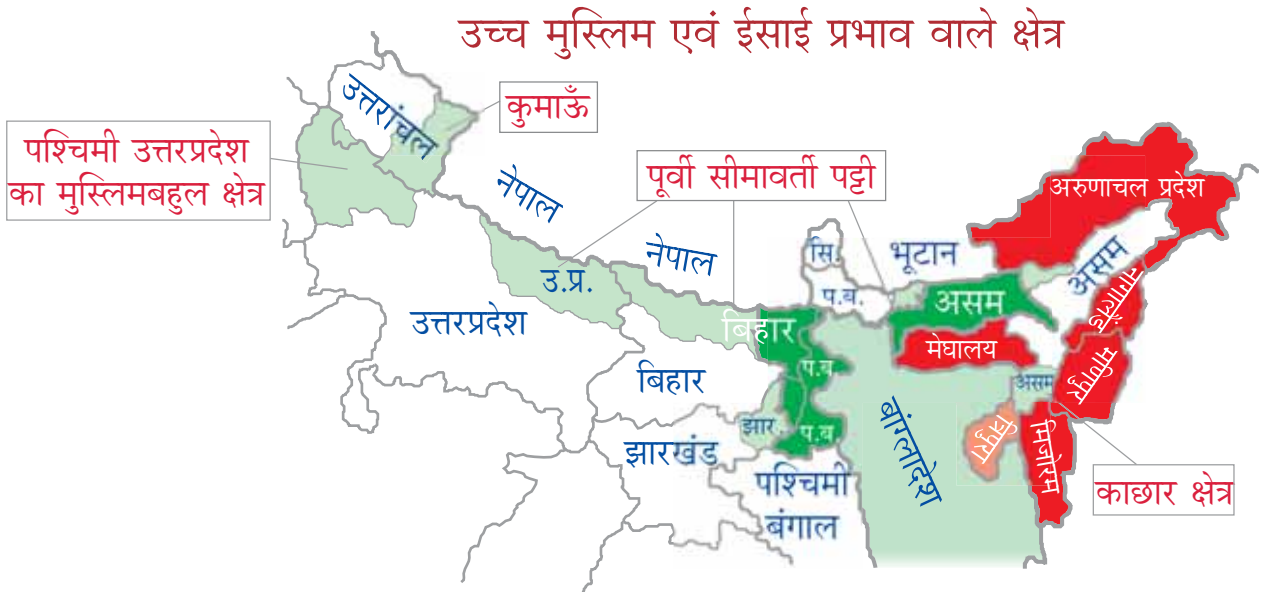


- पूर्णिया के पूर्व की गहरी हरी सीमावर्ती पट्टी में अब मुस्लिम अनुपात ४६ प्रतिशत से अधिक है।
- उससे भी पूर्व के लाल क्षेत्र में ईसाई अब ४५ प्रतिशत से ऊपर हैं और ५ प्रतिशत से अधिक वहाँ मुस्लिम हैं।
- श्वेत रंग में दिखाये गये असम के कुछ भागों और त्रिपुरा में अब भी भारतीय धर्मावलम्बियों का वर्चस्व है। परन्तु ये क्षेत्र अब दोनों ओर से घिरे हुए हैं। पश्चिम बंगाल के श्वेत भाग और सिक्किम भी भारतीय धर्मावलम्बियों के वर्चस्व वाले अन्य क्षेत्रों से अलग पड़ गये हैं। इस प्रकार पूर्णिया से पूर्व के समस्त पूर्वी भारत में भारतीय धर्मावलम्बियों की उपस्थिति संदिग्ध-सी हो गयी है।

*क्रमशः...*

# निष्कर्ष: भारतीय संघ की बिखरती सीमाएँ

- अन्य अनेक धुर सीमावर्ती भागों में अब भारतीय धर्मावलम्बी अल्पसंख्यक हैं। उत्तर में कश्मीर घाटी, उत्तरपूर्व के असमेतर राज्य, धुर दक्षिण में निकोबार द्वीपसमूह, पश्चिमी तट का केरल राज्य और लक्षद्वीप ये सब ऐसे ही सीमावर्ती प्रदेश हैं। इन क्षेत्रों के अनेक भागों में भारतीय धर्मावलम्बियों की उपस्थिति नगण्य रह गयी है।
- केरल वाला लाल क्षेत्र तट के साथ-साथ ऊपर कर्नाटक एवं कोंकण की ओर बढ़ रहा है।
- श्वेत भाग के अनेक क्षेत्रों में भी भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात घटने लगा है।

*क्रमशः...*

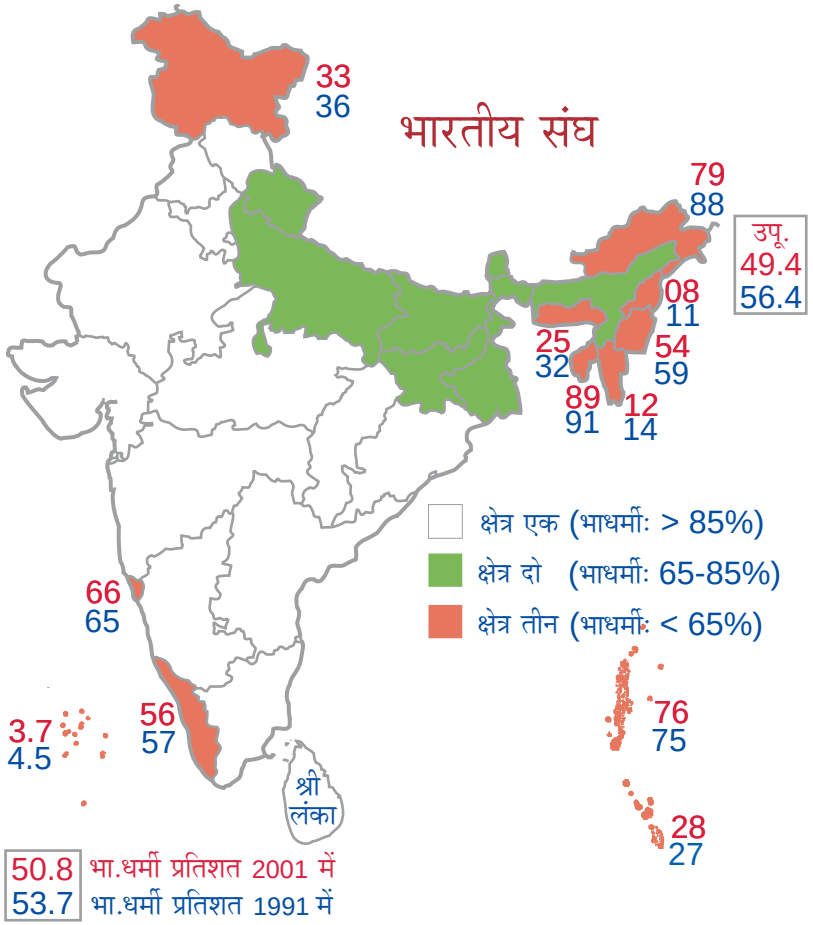


जम्मू-कश्मीर के नीले आँकड़े १९८१ के हैं। वहाँ १९९१ में जनगणना नहीं हो पायी थी।

# निष्कर्ष: भारतीय संघ का बदलता स्वरूप

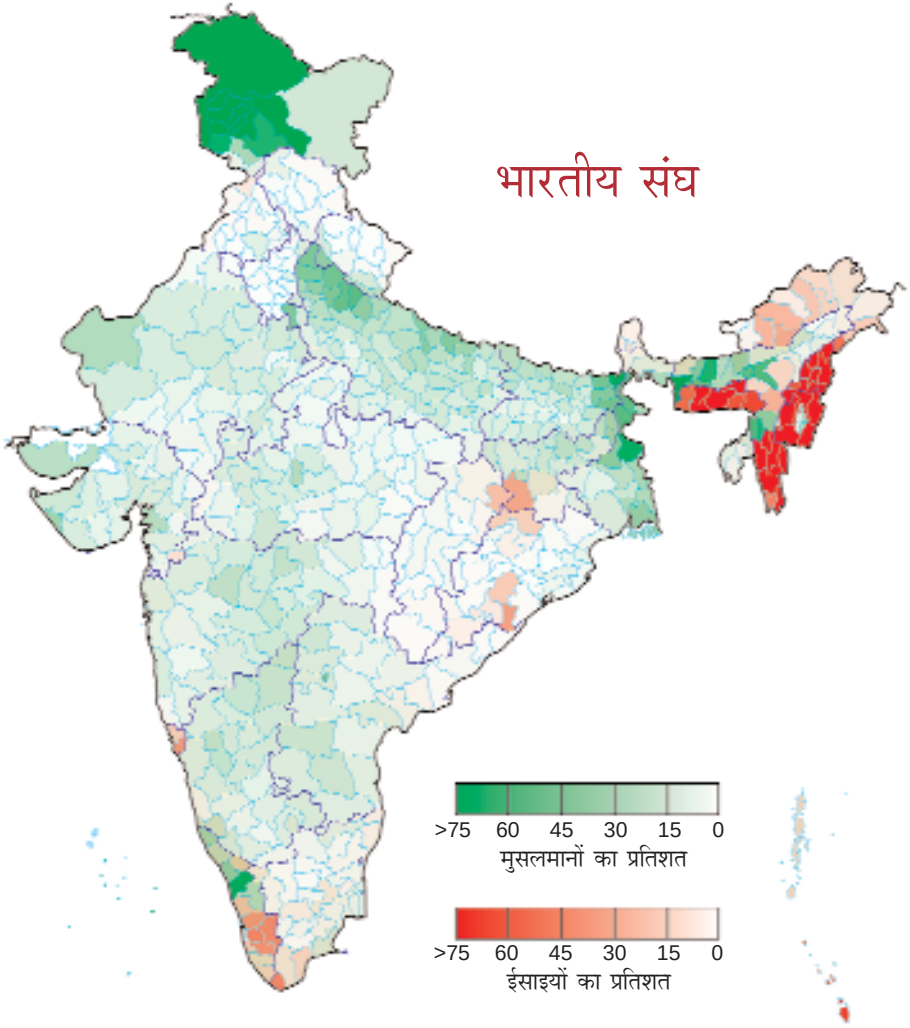


- भारतीय संघ का मानचित्र अब कुछ ऐसा दिखायी देता है।
- मानचित्र में हरे एवं लाल रंग की गहराई सम्बन्धित जनपद में क्रमशः मुसलमानों एवं ईसाइयों के प्रतिशत अनुपात के तुल्य है।
- भारतीय संघ की सीमाएँ गहरी हरी अथवा लाल होती जा रही हैं और अनेक आंतरिक स्थानों का रंग भी अब गहराता जा रहा है।

*क्रमशः...*

# निष्कर्षः आस्थावान् एवं सतर्क राज्य की अनिवार्यता

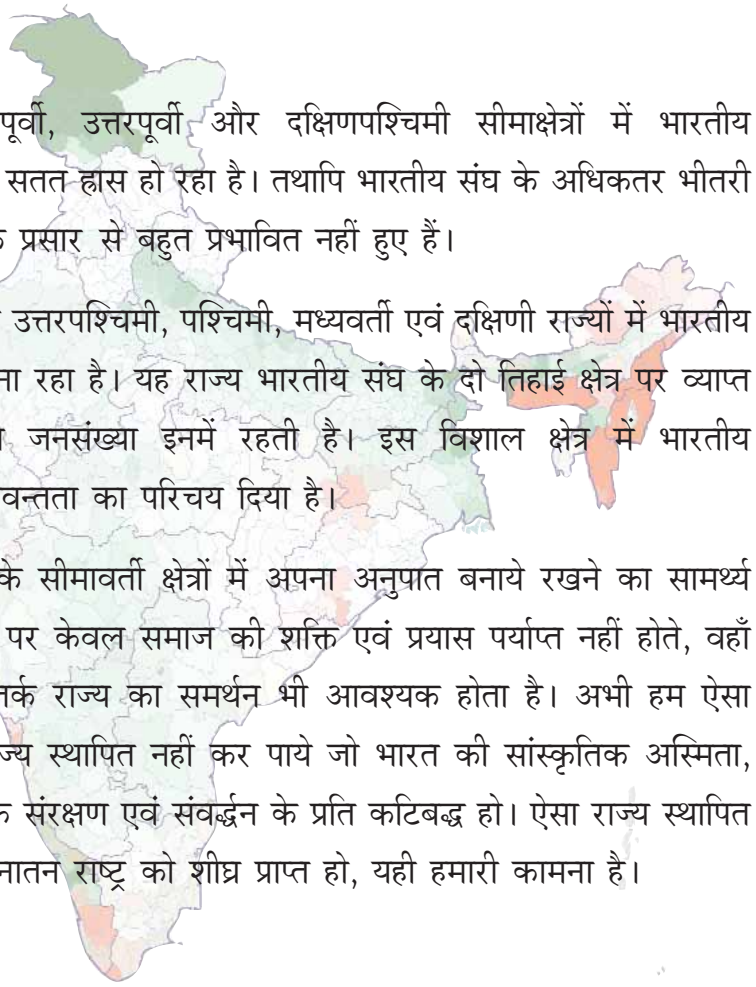

- भारतीय संघ के उत्तरी, पूर्वी, उत्तरपूर्वी और दक्षिणपश्चिमी सीमाक्षेत्रों में भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में सतत ह्रास हो रहा है। तथापि भारतीय संघ के अधिकतर भीतरी क्षेत्र ईसाइयत एवं इस्लाम के प्रसार से बहुत प्रभावित नहीं हुए हैं।
- भारतीय संघ के प्रायः समस्त उत्तरपश्चिमी, पश्चिमी, मध्यवर्ती एवं दक्षिणी राज्यों में भारतीय धर्मावलम्बियों का वर्चस्व बना रहा है। यह राज्य भारतीय संघ के दो तिहाई क्षेत्र पर व्याप्त हैं और प्रायः ६० प्रतिशत जनसंख्या इनमें रहती है। इस विशाल क्षेत्र में भारतीय धर्मावलम्बियों ने अत्यन्त जीवन्तता का परिचय दिया है।
- परन्तु यह जीवन्तता भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में अपना अनुपात बनाये रखने का सामर्थ्य उन्हें नहीं दे पायी। सीमाओं पर केवल समाज की शक्ति एवं प्रयास पर्याप्त नहीं होते, वहाँ एक सशक्त, प्रभावी एवं सतर्क राज्य का समर्थन भी आवश्यक होता है। अभी हम ऐसा सशक्त, समर्थ एवं सतर्क राज्य स्थापित नहीं कर पाये जो भारत की सांस्कृतिक अस्मिता, गौरव और मूल आस्थाओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन के प्रति कटिबद्ध हो। ऐसा राज्य स्थापित कर पाने का सामर्थ्य इस सनातन राष्ट्र को शीघ्र प्राप्त हो, यही हमारी कामना है।